



विश्व मामलों की
भारतीय परिषद

**बहुपक्षवाद,
वैश्विक अर्थव्यवस्था
और
जी-20 का उद्भव**

आलोक शील

आरबीआई चेयर प्रोफेसर,

अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों में अनुसंधान की भारतीय परिषद

बहुपक्षवाद,
वैश्विक अर्थव्यवस्था
और
जी-20 का उद्भव

आलोक शील

आरबीआई चेयर प्रोफेसर,

अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों में अनुसंधान की भारतीय परिषद

विश्व मामलों की भारतीय परिषद

सपू हाउस, नई दिल्ली

Copyright © 2021

विश्व मामलों की भारतीय परिषद

सपू हाउस, नई दिल्ली

सर तेज बहादुर सपू और डॉ एच.एन. कुंजरू के नेतृत्व में प्रख्यात बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा सन 1943 में विश्व मामलों की भारतीय परिषद (आईसीडब्ल्यूए) की स्थापना की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर एक भारतीय परिप्रेक्ष्य बनाना और विदेश नीति के मुद्दों पर ज्ञान और सोच के भंडार के रूप में कार्य करना था। 2001 में संसद के एक अधिनियम द्वारा, विश्व मामलों की भारतीय परिषद को राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया है। परिषद आज आंतरिक संकाय के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञों के माध्यम से नीति अनुसंधान करती है। यह नियमित रूप से सम्मेलनों, संगोष्ठियों, गोलमेज चर्चाओं, व्याख्यानो सहित बौद्धिक गतिविधियों की एक श्रृंखला आयोजित करती है और प्रकाशनों की एक श्रृंखला निकालती है। इसमें सुभंडारित पुस्तकालय, एक सक्रिय वेबसाइट है, और यह 'इंडिया क्वार्टरली' नामक पत्रिका प्रकाशित करती है। अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर बेहतर समझ को बढ़ावा देने और आपसी सहयोग के क्षेत्रों को विकसित करने के लिए आईसीडब्ल्यूए के विभिन्न अंतरराष्ट्रीय चिंतक समूहों और अनुसंधान संस्थानों के साथ 50 से अधिक समझौता ज्ञापन हैं। भारत के अग्रणी शोध संस्थानों, चिंतक समूहों और विश्वविद्यालयों के साथ भी परिषद की भागीदारी है।

विषय-वस्तु

बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव	7
1. मूल और बहुपक्षीय सहयोग का पहला चरण	8
2. बहुपक्षीय सहयोग का दूसरा चरण	11
3. युद्धोत्तर बहुपक्षवाद की संरचना और लाभांश	12
3.1 ब्रेटन वुड्स प्रणाली: अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा प्रणाली और विकास	14
3.2 अंतर्राष्ट्रीय वार्ताएं: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और जलवायु परिवर्तन	16
3.3 युद्धोत्तर बहुपक्षवाद के लाभांश	16
4. युद्धोत्तर बहुपक्षवाद का संकट	18
5. जी-20 और बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग	22
6. आगे की चुनौतियाँ: युद्धोत्तर बहुपक्षवाद का सतत संकट	27
हम यहाँ से कहाँ जाएँ, और क्या इतिहास एक मार्गदर्शक हो सकता है?	29
सन्दर्भ	32
प्रो. आलोक शील	35

बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव*

बहुपक्षवाद की जड़ें आधुनिक यूरोपीय इतिहास में निहित हैं। यह समान सैन्य क्षमता वाले अनेक राज्यों के पारस्परिक रूप से सुनिश्चित विनाश से बचने के लिए एक व्यावहारिक तंत्र के रूप में विकसित हुआ। बीसवीं सदी से, बहुपक्षवाद और वैश्वीकरण ने एक-दूसरे का विरोध किया है। वैश्विक शांति और समृद्धि प्रमुख उप-उत्पाद रहे हैं। बढ़ते राष्ट्रवाद के अंतराल के दौरान दोनों कमजोर हो गए थे। ये आयाम आज तक काम कर रहे हैं। बहुपक्षीय सहयोग के दो प्रमुख चरण रहे हैं। वेस्टफेलिया-मुंस्टर की संधि से शुरू होकर उसके बाद यूरोप के कंसर्ट कार्यक्रम से पहले तक राजनीतिक सहयोग का प्रभुत्व था। पहले चरण में बहुपक्षवाद का राजनीतिक आयाम हावी रहा। दूसरे चरण में आर्थिक सहयोग हावी रहा, क्योंकि यूरोप से परे विश्व को सन्निहित करने के लिए इसकी सीमा का विस्तार हुआ। यह सहयोग युद्ध से तबाह अर्थव्यवस्थाओं के पुनर्निर्माण, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा प्रणाली की मरम्मत और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को पुनर्जीवित करने के साथ शुरू हुआ। बाद में यूनएफसीसीसी के माध्यम से मानवजनित जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लिए इसे विस्तारित कर दिया गया था। ब्रेटन वुड्स प्रणाली का ध्यान भी उन्नत देशों से विकासशील देशों पर स्थानांतरित हो गया।

उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में विकास की धीमी गति से बहुपक्षवाद के युद्धोत्तर संकट का पता लगाया जा सकता है क्योंकि एशिया, विशेष रूप से चीन के विकास में तेजी आई है। कभी इसकी सबसे मजबूत पक्षधर रही उन्नत अर्थव्यवस्थाओं का वैश्वीकरण से मोहभंग हो रहा था। वैश्विक अर्थव्यवस्था में बदलते भार को समायोजित करने में ब्रेटन वुड्स संस्थानों की विफलता से इन संस्थानों ने अपनी प्रासंगिकता और वैधता खो दी। बहुपक्षीय व्यापार और जलवायु वार्ता एक ठहराव पर पहुंच गई क्योंकि उन्नत अर्थव्यवस्थाएं अपने उदय से पहले विकासशील देशों द्वारा प्रस्तावित विशेष संरचना का विस्तार करने के लिए तैयार नहीं थीं। बहुपक्षवाद के कमजोर होने पर दो विरोधी प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं: पहला बहुपक्षवाद का उद्भव और दूसरा वैश्विक वित्तीय संकट को देखते हुए जी-20 के माध्यम से बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग को पुनर्जीवित करने का प्रयास। अपने शुरुआती वादे के बाद, जी-20 बेकार होता जा रहा है क्योंकि उप-इष्टतम बहुपक्षीय विकल्प को ताकत मिल रही है।

आगे देखते हुए, अल्प समय के लिए पीछे हटने के बावजूद कोई भी वैश्वीकरण से दूर नहीं हो रहा है, जो धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से राष्ट्र-राज्य की वेस्टफेलियन धारणा को कमजोर कर रहा है। चार संघर्षों- अर्थात् जी-20 के भीतर दबाव समूहों का सामंजस्य ताकि वैश्वीकरण को सभी प्रमुख हितधारकों के लिए काम करते हुए देखा जा सके; वैश्विक शासन में चीन का समायोजन; इस तरह के समायोजन की प्रक्रिया में बुनियादी वैचारिक मतभेदों में कैसे सामंजस्य लाया जा सकता है; और बहु-हितधारक बहुपक्षवाद जो राष्ट्र-राज्य पर आधारित संप्रभुता की वेस्टफेलियन धारणा से परे है, इनके समाधान से बहुपक्षवाद के भविष्य के आकार लेने की संभावना है।

* लेखक द्वारा 'बदलती दुनिया में संशोधित बहुपक्षवाद को आगे बढ़ाना' विषय पर 10 दिसंबर 2020 को आभासी तौर पर आयोजित आईसीडीब्ल्यू सम्मेलन में इस पत्र का एक संक्षिप्त संस्करण प्रस्तुत किया गया था।

1. बहुपक्षीय सहयोग की उत्पत्ति और पहला चरण

सत्ता के संतुलन को संस्थागत बनाने का आग्रह ही नियम आधारित बहुपक्षीय सहयोग के जन्म के पीछे का कारण था। यूरोप में पवित्र रोमन साम्राज्य के टूटने के बाद पहली बार बहुपक्षवाद के उद्भव के अनुकूल स्थितियां बनीं, जिसके कारण समान सैन्य क्षमता वाले अनेक छोटे राज्य बने।

बहुपक्षवाद, या संप्रभु राष्ट्रों के एक समुदाय के बीच सहयोग पर आधारित एक नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था ने उन तरीकों के टूलकिट में देर से प्रवेश किया, जिसके द्वारा देशों ने अतीत में एक दूसरे के साथ संपर्क बनाये। आधी सहस्राब्दी से भी कम पहले तक उनके बीच के संबंधों को नियंत्रित करने पर कोई सहमत नियम नहीं थे। शक्तिशाली ही सही था, और राज्यों के बीच संबंधों को सैन्य दुस्साहस से सूचित किया गया। जंगल का कानून प्रचलित था। देशों ने युद्ध और कूटनीति के मिश्रण के माध्यम से अपनी इच्छा को दूसरों पर थोपने की कोशिश की।

कूटनीति ने कमजोर राज्यों को शक्ति सम्पन्न राज्यों द्वारा निर्धारित शर्तों पर, या समान क्षमता वाले राज्यों को तब तक शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व की अनुमति दी, जब तक संतुलन में अंतर्निहित स्थितियां बनी रहीं। शांति सहमत नियमों के बजाय परस्पर भय पर आधारित थी। कूटनीति अधिकतर द्विपक्षीय थी, लेकिन कई अवसरों पर यह कई राज्यों को एक बड़े दुश्मन, या अन्य समान राज्यों के विरुद्ध राज्यों के गठबंधन में शामिल होने की सुविधा प्रदान कर सकती थी। इस तरह के गठबंधन अस्थायी व अस्थिर थे और किन्हीं निर्धारित सिद्धांतों द्वारा शासित नहीं थे। निश्चित रूप से, इन परिस्थितियों में कूटनीति युद्ध से अलग नहीं थी। दुनिया में यह ऐसी स्थिति थी कि प्रसिद्ध युद्ध दार्शनिक, जनरल कार्ल वॉन क्लॉजविट्ज़ ने युद्ध को अन्य माध्यमों से कूटनीति की निरंतरता के रूप में वर्णित किया (क्लॉजविट्ज़ 1989)

सत्ता के संतुलन को संस्थागत बनाने का आग्रह ही नियम आधारित बहुपक्षीय सहयोग के जन्म के पीछे का कारण था। यूरोप में पवित्र रोमन साम्राज्य के टूटने के बाद पहली बार बहुपक्षवाद के उद्भव के अनुकूल स्थितियां बनीं, जिसके कारण समान सैन्य क्षमता वाले अनेक छोटे राज्य बने। वे लंबे समय तक लगातार युद्ध की स्थिति में रहे क्योंकि वे लंबे समय तक अपनी इच्छा एक दूसरे पर नहीं थोप सकते थे। चूंकि चर्च और राज्य अटूट रूप से जुड़े हुए थे, इसलिए इस टकराव ने अक्सर धार्मिक संघर्ष का रूप लिया, जैसे कि ग्यारहवीं और तेरहवीं शताब्दी के धर्मयुद्ध, और बाद में सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के दौरान पवित्र रोमन साम्राज्य के भीतर अंतर-ईसाई सांप्रदायिक युद्ध, जिसकी परिणति 1618-48 तक के तीस वर्ष तक चलने वाले युद्ध में हुई।

संसाधनों, लोगों और शासकों का लगातार विनाश की परिणति, अंततः 1648 में मुंस्टर-वेस्टफेलिया की संधि (किसिंजर 2015) में हुई, जिसमें लगभग 300 राज्य प्रमुख शामिल हुए। संधि का तात्कालिक परिणाम यह स्वीकार करना था कि राज्य बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के अपने आधिकारिक धर्मों को चुनने के लिए स्वतंत्र थे।

समय के साथ यह सिद्धांत मूल रूप से 'वेस्टफेलियन संप्रभुता' की स्वीकृति, या अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की अनुल्लंघनीयता और अन्य राज्यों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने में परिवर्तित हो गया। इसने यूरोप में बड़े साम्राज्यों के आरंभ के युग और राष्ट्र-राज्यों के जन्म (फर् 2005) को चिह्नित किया। आधुनिक अंतरराष्ट्रीय बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव*

संबंधों और बहुपक्षवाद के विचार को आमतौर पर वेस्टफेलिया की संधि में तलाशा जाता है।

इस प्रकार बहुपक्षवाद की पहली सफलता शांति का लाभांश थी। युद्ध समाप्त नहीं हुए, लेकिन वेस्टफेलिया की संधि के अंतर्गत मध्य यूरोप की धार्मिक और राजनीतिक सीमाओं पर सहमति हो गई। जो उसके बाद एक सदी तक अधिकतर अपरिवर्तित रहीं। गठबंधनों के माध्यम से कुछ राज्यों का विलय हुआ और फ्रांस, प्रशिया, ऑस्ट्रिया और रूस जैसे राज्यों के आकार और शक्ति में वृद्धि हुई। अठारहवीं शताब्दी के अंत में नेपोलियन के युद्धों से वेस्टफेलिया की शांति नष्ट हो गई थी, लेकिन इसने स्वतंत्रता के क्रांतिकारी विचारों को फैलाने का काम किया, जिसने अधिक राष्ट्र-राज्यों को जन्म दिया और बहु-जातीय, बहु-सांस्कृतिक और बहु-भाषाई साम्राज्य की धारणा को कमजोर कर दिया। नेपोलियन की पराजय के बाद यूरोप में सामंजस्य स्थापित कर प्रमुख राज्यों, इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, ऑस्ट्रो हंगरी और प्रशिया के बीच शक्ति संतुलन के माध्यम से शांति और स्थिर सीमाओं को बहाल किया गया (लासक्यूरेट्स 2017)।

वेस्टफेलिया की संधि से बना यह बहुपक्षीय सहयोग यूरोप तक ही सीमित था। यूरोप के बाहर के क्षेत्रों में इसका विस्तार नहीं हुआ। यह विचारों (ज्ञानोदय) और प्रौद्योगिकी (औद्योगिक क्रांति) में एक क्रांति के परिणामस्वरूप यूरोप के उदय की अवधि थी, जो कम से कम दो सहस्राब्दी तक वैश्विक अर्थव्यवस्था पर हावी रहनेवाले दो विशाल पूर्वी साम्राज्यों, चीन और भारत के पतन के समानान्तर रही। 1000 ईस्वी के अंत तक देशों में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में बहुत कम अंतर था, अर्थव्यवस्थाओं का आकार काफी हद तक जनसंख्या के कार्य पर आधारित था। चीन और भारत मिलकर पश्चिमी यूरोप, जापान के आर्थिक आकार के लगभग छह गुना के बराबर थे और बाद में 'पश्चिमी शाखा' बन गए। यूरोप में तकनीकी प्रगति ने इस आय अंतर को कम कर दिया, क्योंकि 1500 और 1820 के बीच इसमें "बाकी" (अन्य सभी देशों) में प्रति व्यक्ति केवल 0.02% की तुलना में लगभग 0.14% की दर से औसत वार्षिक वृद्धि हुई। 1820 में भी एशिया का आर्थिक आकार यूरोप और उसकी पश्चिमी शाखाओं के आकार का 1.7 गुना था (मैडिसन 2001 और 2004)।

भौतिक और मानव संसाधनों पर कब्जे के माध्यम से लागू वैश्वीकरण के साथ-साथ मुक्त व्यापार के साम्राज्यवाद ने वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में व्यापार की हिस्सेदारी को 1800 से पहले की अवधि में अनुमानित 2-10 प्रतिशत से बढ़ाकर 1912 तक 30 प्रतिशत कर दिया, यह एक ऐसा स्तर था जो 1970 के दशक तक दुबारा नहीं बढ़ा।

बहुपक्षीय सहयोग के माध्यम से यूरोप में सीमाओं के स्थिर होने पर भी यूरोप और दुनिया के अन्य हिस्सों के बीच के एक उंचते तकनीकी और सैन्य अंतर के साथ, संसाधन समृद्ध उपनिवेशों के लिए एक टकराव हुआ, जो अमेरिका, एशिया और अफ्रीका में प्रमुख यूरोपीय शक्तियों द्वारा औद्योगिक उत्पादों के लिए कब्जाए हुए निर्यात बाजारों के रूप में दोगुना हो गया। इन उपनिवेशों को ट्रान्साटलांटिक पर केंद्रित एक उभरती हुई विश्व प्रणाली में एकीकृत किया गया था, जिसमें यूरोप के लोगों ने भारतीय समुद्र तट के माध्यम से चीन के दक्षिण-पूर्वी तट से अफ्रीका के हॉर्न तक, समृद्ध हिंद महासागर पर नियंत्रण कर लिया था, जो लंबे समय से वैश्विक अर्थव्यवस्था पर बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव*

हावी था, और जिससे एशिया ने अपनी समृद्धि प्राप्त की थी। भौतिक और मानव संसाधनों पर कब्जा करने के माध्यम से लागू वैश्वीकरण के साथ-साथ मुक्त व्यापार के साम्राज्यवाद ने वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में व्यापार की हिस्सेदारी को 1800 से पहले की अवधि में अनुमानित 2-10 प्रतिशत से बढ़ाकर 1912 तक 30 प्रतिशत कर दिया, यह एक ऐसा स्तर था जो 1970 के दशक तक दुबारा नहीं बढ़ा। वैश्विक अर्थव्यवस्था में एशिया की आर्थिक छाप अब तेजी से सिकुड़ गई है, यूरोप और पश्चिमी शाखाएं 1950 तक एशिया से 3.8 गुना बड़ी हो गई। (ऑर्टिज़-ओस्पिना और बेलटेकियन_यू; मैडिसन 200: 175)।

यूरोप का एकीकरण कार्यक्रम अंततः थ्यूसीडाइड्स ट्रेप और राष्ट्रवाद के बढ़ते ज्वार के आगे झुक गया। एक सदी तक यूरोप में शांति बनाए रखने के बाद भी यह समायोजन बढ़त बना रही नई मजबूत शक्तियाँ अर्थात् एकीकरण के बाद जर्मनी और इटली और जापान को समायोजित करने में विफल रहा। यह यूरोप के बाहर, विशेष रूप से एक ढहते हुए ओटोमन साम्राज्य से उत्पन्न होने वाली साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्विता को यूरोप में फैलने से रोकने में भी असमर्थ था। वर्साय की अन्यायपूर्ण संधि, जिसने जर्मनी को कमजोर करके शक्ति के संतुलन को बदलने की मांग की, अंततः दो दशकों के भीतर द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बनी।

कंसर्ट एक रूढ़िवादी ताकत थी जिसने उदारवाद और राष्ट्रवाद की बढ़ती ताकतों को रोकने की कोशिश की। इन बलों ने अंततः समायोजन को कमजोर कर दिया, और दो विश्व युद्धों ने, वेस्टफेलिया की संधि और नेपोलियन युद्धों के बाद शुरू हुई राष्ट्र राज्यों के गठन की प्रक्रिया को पूरा किया। यूरोपीय शक्तियों के औपनिवेशिक प्रभुत्व भी मुक्त होकर स्वतंत्र राष्ट्र राज्य बन गए। आज़ादी की मांग वेस्टफेलियन अवधारणा से ली गई है (किसिंजर 2015) । इन राज्यों को अब तक यूरोप में ही सीमित बहुपक्षीय प्रणाली में शामिल कर लिया गया था।

2. बहुपक्षीय सहयोग का दूसरा चरण

बहुपक्षवाद के पहले चरण की प्रेरक शक्ति समान रूप से मेल खाने वाले राज्यों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की इच्छा में निहित थी, जबकि बहुपक्षवाद के दूसरे चरण की प्रेरक शक्ति थी त्वरित वैश्वीकरण द्वारा आवश्यक आर्थिक सहयोग।

युद्धोत्तर अवधि में बहुपक्षीय सहयोग का दूसरा चरण आरंभ हुआ जिसमें शांति लाभांश को बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग पर आधारित समृद्धि लाभांश के साथ जोड़ा गया था। संयुक्त राष्ट्र प्रणाली, प्रथम विश्व युद्ध के बाद शांति बनाए रखने की असफल कोशिश करने वाले राष्ट्र संघ को प्रतिबिंबित करती है, इसे अपनी प्रमुख सुरक्षा परिषद के माध्यम से एक नियम-आधारित वैश्विक राजनीतिक व्यवस्था को लागू करने के लिए स्थापित किया गया था, जिसमें प्रमुख विश्व शक्तियाँ, अर्थात् अमेरिका, चीन, रूस, फ्रांस और यूनाइटेड किंगडम शामिल थे। वर्साय की संधि की उन गलतियों से बचा गया, जिसकी सतह के नीचे एक और युद्ध के बीज शामिल थे, विजेताओं और पराजितों के बीच एक सम्मानजनक शांति वार्ता की गई, जहाँ विजेताओं ने पराजितों को अपने पैरों पर वापस खड़ा करने की जिम्मेदारी ली। संयुक्त राष्ट्र ने शीत युद्ध के दौर में, नाटो और वारसाँ संधि में शामिल देशों के बीच बिखरी हुई दुनिया में एक असहज शांति का प्रबंधन करने के लिए संघर्ष किया।

बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उदभव*

बहुपक्षवाद के पहले चरण की प्रेरक शक्ति समान रूप से मेल खाने वाले राज्यों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की इच्छा में निहित थी, जबकि बहुपक्षवाद के दूसरे चरण की प्रेरक शक्ति त्वरित वैश्वीकरण द्वारा आवश्यक आर्थिक सहयोग थी। एशिया, अफ्रीका और नई दुनिया के यूरोपीय उपनिवेशीकरण के माध्यम से 'लागू मुक्त व्यापार' के माध्यम से पहले चरण के दौरान वृहद् वैश्विक एकीकरण शुरू हो गया था। मानव इतिहास में हमेशा 5 प्रतिशत से कम रहने वाला व्यापारिक निर्यात/सकल घरेलू उत्पाद अनुपात, प्रथम विश्वयुद्ध के पहले 30 प्रतिशत से ऊपर था, यह एक ऐसा स्तर था जो 1970 के दशक के मध्य में ही प्राप्त हुआ था। युद्ध के दौरान युद्ध और 1930 के महामंदी के बाद राष्ट्रवाद के पुनरुत्थान के कारण वैश्वीकरण तेजी से पीछे हट गया, जिससे अमेरिकी कांग्रेस द्वारा पारित स्मूट-हॉली टैरिफ द्वारा व्यापक संरक्षणवाद शुरू हुआ।

ब्रेटन वुड्स प्रणाली युद्ध के बाद के बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग के लिए प्रारंभिक मंच थी। बाद के वर्षों में संयुक्त राष्ट्र प्रणाली का भी विस्तार हुआ और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा से आगे बढ़कर आजीविका के मुद्दों से निपटने के लिए, यह प्रभावी रूप से ब्रेटन वुड्स प्रणाली का हिस्सा बन गया। इस प्रणाली का मूल आवेग, प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान तबाह हुए बुनियादी ढांचे का आर्थिक पुनर्निर्माण; दूसरा, टूटी हुई अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली को वापस अपने पैरों पर लाना था, क्योंकि प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं समय-परीक्षित सोने के मानक से पीछे चली गई थीं; और तीसरा उद्देश्य, महामंदी के कारण उच्च टैरिफ बाधाओं के निर्माण से बाधित अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बहाल करना था। प्रमुख पश्चिमी शक्तियों ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार के पुनरुद्धार और अधिक बाजार पहुंच के लिए टैरिफ बाधाओं को कम करने पर आक्रामक रूप से जोर दिया क्योंकि इससे युद्ध के पहले उनकी अर्थव्यवस्थाओं को बहुत लाभ हुआ था। पूर्व उपनिवेश, उपनिवेशवाद के अंतर्गत मुक्त व्यापार के अपने अनुभव को देखते हुए, अनिच्छुक उदारवादी थे, से आर्थिक विकास के आवक दिखने वाले मॉडल को प्राथमिकता देते थे।

3. युद्ध के बाद बहुपक्षवाद की संरचना और लाभांश

युद्धोत्तर बहुपक्षवाद को कई स्तंभों द्वारा समर्थित किया गया था। जिनमें पहला, संयुक्त राष्ट्र प्रणाली थी जो समय के साथ डब्ल्यूएचओ, एफएओ, यूएनडीपी जैसे निकायों के माध्यम से आजीविका संबंधी चिंताओं को दूर करने के लिए सुरक्षा के मुद्दों से आगे निकल गई।

दूसरा, औपचारिक रूप से युद्ध समाप्त हो गया था, अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली और युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण से संबंधित मुद्दों को संबोधित करने के लिए, ब्रेटन वुड जुड़वां, आईएमएफ और विश्व बैंक, स्थापित किए गए थे। तीसरा, गैट, जिसे बाद में विश्व व्यापार संगठन में रूपांतरित किया गया, इसने टैरिफ बाधाओं को तोड़कर अंतरराष्ट्रीय व्यापार को पटरी पर लाने का प्रयास किया। पूर्व उपनिवेशों के प्रचलित मुक्त व्यापार और परिणामी गैर-औद्योगिकीकरण और अविकसितता के अनुभव के कारण उपनिवेशों के विघटन की प्रक्रिया अंतरराष्ट्रीय व्यापार के अनुकूल नहीं थी।

चौथा, समय के साथ विशिष्ट क्षेत्रों में बहुपक्षीय सहयोग से निपटने के लिए स्थापित बीआईएस, एफएसबी, एमआईजीए, आईओएससीओ, यूएनएफसीसीसी जैसे कई कार्यात्मक अंतरराष्ट्रीय संगठनों (आईओ) का प्रसार हुआ।

बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव*

पाँचवां, कई वर्षों में एडीबी, एफडीबी, आईएसबीडी, आईएडीबी, ईयू, आसियान, सीएमआईएम, ईएमयू, ईबीआरडी, नाफ्टा, एनडीबी, एआईआईबी, आदि जैसे कई क्षेत्रीय और बहुपक्षीय निकायों की स्थापना की गई। सात प्रमुख वैश्विक शक्तियां जो राजनीतिक और आर्थिक सहयोग दोनों पर नजर रखती थीं और उन पर हावी थीं, जो खुद को वैश्विक अर्थव्यवस्था के एक अनौपचारिक संचालन समूह में शामिल करती थीं, जिसे लोकप्रिय रूप से जी-7 (यूएस, यूके, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान और कनाडा) के रूप में जाना जाता था। ये शिखर स्तर पर नियमित रूप से, यूरोप के पुराने कांसर्ट कार्यक्रम की याद दिलाती हैं। नेताओं के बीच स्वतंत्र और स्पष्ट चर्चा हुई और राजनीतिक और आर्थिक दोनों प्रमुख वैश्विक मुद्दों पर आम सहमति बनी, इनके बिना यह किसी भी तरह से कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं था।

छठा, शीत युद्ध के भू-राजनीतिक विभाजन को देखते हुए, पूंजीवाद और उदार लोकतंत्र - 'वाशिंगटन आम सहमति' (विलियमसन 2004-2005) - भी युद्ध के बाद के बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग की आधारशिला बन गई। यह एक राष्ट्र राज्य में प्रचलित आंतरिक व्यवस्था के प्रति उदासीनता की वेस्टफेलियन धारणा से प्रस्थान था। सोवियत गुट के पतन के परिणामस्वरूप शीत युद्ध की समाप्ति के साथ इस आम सहमति की चुनौती गायब हो गई और चीन का बदलाव वस्तुतः उदार लोकतंत्र से रहित एक पूंजीवादी मॉडल था। सोवियत ब्लॉक के देशों को ब्रेटन वुड्स प्रणाली के भीतर समायोजित किया गया था।

सभी देश उन संस्थानों के सदस्य थे जिनके माध्यम से सहयोग हुआ, जबकि विकास संबंधी असंतुलन को दर्शाने वाले अधिकांश मुद्दों पर उत्तर-दक्षिण विभाजन बना रहा। इसके परिणामस्वरूप सहयोग के दो बिल्कुल अलग मॉडल बन गए।

युद्ध के बाद के युग में बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग के प्रमुख क्षेत्र, अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली (आईएमएफ), विकास (विश्व बैंक प्रणाली), (जीएटीडी और बाद में डब्ल्यूटीओ) और जलवायु परिवर्तन (यूएनएफसीसीसी) पर केंद्रित थे। सभी देश उन संस्थानों के सदस्य थे जिनके माध्यम से सहयोग हुआ, जबकि विकास संबंधी असंतुलन को दर्शाने वाले अधिकांश मुद्दों पर उत्तर-दक्षिण विभाजन बना रहा। इसके परिणामस्वरूप सहयोग के दो बिल्कुल अलग मॉडल बन गए। पहले मॉडल में ऐसे संस्थान शामिल थे जहां शेरधारिता का पैटर्न द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में प्रचलित वैश्विक व्यवस्था को दर्शाता था। विश्व बैंक और आईएमएफ जैसे संस्थानों में निर्णय लेने की प्रक्रिया पर अमेरिका और यूरोपीय देशों - जी-7 का प्रभुत्व था। उन्होंने इन संस्थानों के लिए अधिकांश संसाधन प्रदान किए, जिससे उन्हें दाताओं की स्थिति में रखा गया।

दूसरे मॉडल में विश्व व्यापार संगठन और यूएनएफसीसीसी जैसी अन्य संस्थाओं का समूह शामिल हैं, जो अधिक लोकतांत्रिक थे, जिनमें प्रत्येक देश की समान आवाज और वजन था। अलग-अलग उत्तर-दक्षिण दृष्टिकोणों के कारण इन संस्थानों में निर्णय लेना अधिक कठिन था, जिसके परिणामस्वरूप विकासशील देशों के लिए विशेष रूप से प्रावधान बनाए गए थे, जिसमें विकास के स्तरों के लिए अलग-अलग जिम्मेदारियां शामिल थीं। इन अलग-अलग जिम्मेदारियों और अधिकारों में अंतर्निहित समझ यह थी कि पूर्व साम्राज्यवादी शक्तियों ने अपने पूर्व उपनिवेशों के अविकसित होने की कुछ जिम्मेदारी ली थी, और उनके ग्रीनहाउस उत्सर्जन ने वैश्विक कॉमन्स का इस्तेमाल किया था, जिससे विकासशील देशों को पर्यावरणीय कोण से बढ़ने के लिए बहुत कम जगह छोड़ी गई थी।

बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव*

3.1 ब्रेटन वुड्स प्रणाली: अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली बैंड का विकास

संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1971 में स्वर्ण मानक को प्रभावी ढंग से समाप्त कर मूल ब्रेटन वुड्स प्रणाली को समाप्त कर दिया। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के बाहरी असंतुलन को अब मुद्राओं की बाजार विनिमय दरों में बदलाव के माध्यम से समायोजित किया गया, जिसे ब्रेटन वुड्स मार्क II के रूप में जाना जाने लगा।

ब्रेटन वुड्स सम्मेलन के पहले कार्यों में से एक था महामंदी और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सोने के मानक के टूटने के बाद अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली की मरम्मत करना। इसने सभी प्रमुख मुद्राओं को डॉलर और डॉलर को सोने से आंका। इस प्रकार डॉलर ने ब्रिटिश पाउंड स्टर्लिंग को वास्तविक वैश्विक आरक्षित मुद्रा में बदल दिया। इसने एक अंशदायी कोटा और शेयरहोल्डिंग प्रणाली विकसित की, जो द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में अर्थव्यवस्थाओं के सापेक्ष आकार को अंशांकित करने के लिए की गई थी, इसे बाहरी भुगतान समस्याओं के असंतुलन को दूर करने के लिए स्थापित किया गया था।

संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1971 में स्वर्ण मानक को प्रभावी ढंग से समाप्त कर मूल ब्रेटन वुड्स प्रणाली को समाप्त कर दिया। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के बाहरी असंतुलन को अब मुद्राओं की बाजार विनिमय दरों में बदलाव के माध्यम से समायोजित किया गया, जिसे ब्रेटन वुड्स मार्क II के रूप में जाना जाने लगा। दूसरी ओर उभरते बाजारों और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) ने डॉलर के मानक के विभिन्न संस्करणों को अधिकतर बरकरार रखा। चूंकि बाहरी असंतुलनों को समवर्ती रूप से समायोजित नहीं किया गया था, इसलिए अचानक बंद होने से अब वे भुगतान संतुलन संकट में घिर गए थे और बाजार दरों या अपेक्षाओं के संबंध में आंकी गई विनिमय दरें अत्यधिक बढ़ गईं। लेकिन ब्रेटन वुड्स II ने कुछ ईएमडीई को, विशेष रूप से एशिया में, अपनी विनिमय दरों को प्रतिस्पर्धी और कम मूल्यांकित रखने और निर्यात-आधारित विकास की रणनीति को अपनाने में सक्षम किया। आईएमएफ कोटा का अब ज्यादातर ईएमडीई के बीमा तंत्र के रूप में उपयोग किया जाता था। चूंकि अधिकांश कोटा उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के थे, इसलिए वे प्रभावी रूप से दाता बन गए जिन्होंने उधारदाताओं के रूप में अपने हितों की रक्षा के लिए कठोर आर्थिक शर्तें निर्धारित कीं।



युद्ध से तबाह यूरोप और युद्ध के बाद जापान के पुनर्निर्माण से विश्व बैंक प्रणाली की उत्पत्ति हुई थी। चूंकि इन देशों के मानव संसाधन पहले से ही अत्यधिक विकसित होने और विश्व बैंक के प्रयासों को अच्छी तरह से वित्त पोषित मार्शल योजना द्वारा पूरित किये जाने के कारण इन अर्थव्यवस्थाओं में अपेक्षाकृत तेजी से सुधार हुआ। इन्हें नष्ट हुए बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण और उत्पादक निवेश को फिर से शुरू करने के लिए केवल पूंजी की आवश्यकता थी। 1970 के दशक तक विश्व बैंक का ध्यान ईएमडीई की विकास संबंधी विशाल जरूरतों को पूरा

बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव*

विश्व मामलों की भारतीय परिषद

करने पर केंद्रित हो गया था। उधार पर दिए गए संसाधन एक बार फिर मुख्य रूप से उन्नत देशों के थे जो बैंक के प्रमुख शेयरधारक थे, और इन्हें पूंजी की लागत से ऊपर, और उधार लेने वाली सरकारों से संप्रभु गारंटी के साथ, उनके हितों की रक्षा के लिए उपलब्ध कराया गया था। दाता देश, अपेक्षाकृत मामूली मात्रा में एकमुश्त अंतर्राष्ट्रीय विकास संघ (आईडीए) अनुदान के साथ शीर्ष पर हैं।

इस प्रकार, समय के साथ ब्रेटन वुड्स प्रणाली युद्ध के बाद अर्थव्यवस्थाओं के पुनर्निर्माण के कारक से गरीब विकासशील देशों के लिए संस्थानों की सहायता करने वाली संस्था में विकसित हुई। 'टू गैप' मॉडल (एडेलमैन एंड चेनरी 1966; एजाकी 1975) ने इस पुनः अभिविन्यास के व्यापक आर्थिक आधार का गठन किया। क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय पूंजी बाजारों तक उनकी सीमित पहुंच के कारण पूंजी और विदेशी मुद्रा की कमी को विकासशील देशों के लिए बाध्यकारी बाधा माना जाता था। आईएमएफ ने विदेशी मुद्रा अंतर को संबोधित किया, जबकि विश्व बैंक ने उनके सीमित बचत को पूरक उपलब्ध कराया।

3.2 अंतर्राष्ट्रीय वार्ता: अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और जलवायु परिवर्तन

युद्ध के बीच की अवधि में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में व्यवधान के परिणामस्वरूप, और उसके बाद 1930 के दशक की महामंदी से संरक्षणवादी स्मूट हॉली टैरिफ के व्यापक प्रभाव के कारण, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रथम विश्वयुद्ध के पहले के वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद 30 प्रतिशत से गिर कर दो दशकों के भीतर 10 प्रतिशत तक पहुंच गया। युद्ध के बाद की अवधि में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापारिक माल पर टैरिफ, कोटा और सब्सिडी को कम करने के लिए 1947 में टैरिफ एंड ट्रेड (जीएटीटी) पर सामान्य समझौता हुआ था। गैट को बाद में विश्व व्यापार संगठन में जोड़ दिया गया जिसमें सेवाएं और बौद्धिक संपदा अधिकार भी शामिल थे। व्यापार का सकल घरेलू उत्पाद अनुपात फिर से बढ़ना शुरू हो गया, 1970 के दशक के मध्य तक यह 30 प्रतिशत तक पहुंचा और 2008 में 60 प्रतिशत से ऊपर पहुंच गया (ऑटिज़-ओस्पिना और बेलटेकियन_यू)। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि के साथ-साथ वैश्विक अर्थव्यवस्था की विकास दर में भी वृद्धि हुई।



ईएमडीई के नेतृत्व में वैश्विक विकास की गति ने अनेक चिंताओं को जन्म दिया क्योंकि मानव गतिविधियां अपरिवर्तनीय मानव निर्मित जलवायु परिवर्तन पैदा कर रही थीं। इन चिंताओं के कारण 1992 में रियो डी जनेरियो में पृथ्वी शिखर सम्मेलन हुआ जहां एक नए बहुपक्षीय निकाय, जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) पर बातचीत की गई और सभी देशों द्वारा इस पर हस्ताक्षर किए गए। बाद में 1997 में, यूएनएफसीसीसी के तत्वावधान में क्योटो प्रोटोकॉल पर सहमति हुई थी, और 2005 में इसे लागू किया बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव*

गया, जिसके अंतर्गत सामान्य लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों (सीबीडीआर) के सिद्धांत के आधार पर उन्नत अर्थव्यवस्था वाले देशों के लिए उत्सर्जन लक्ष्य निर्धारित किए गए थे। इस प्रोटोकॉल को 2016 में पेरिस समझौते से हटा दिया गया था, जहां विकासशील देशों ने वैश्विक तापमान वृद्धि को पूर्व-औद्योगिक स्तरों के 1.5-2 घटक प्रतिशत के भीतर सीमित करने में अधिक जिम्मेदारी लेने के लिए हस्ताक्षर किए थे।

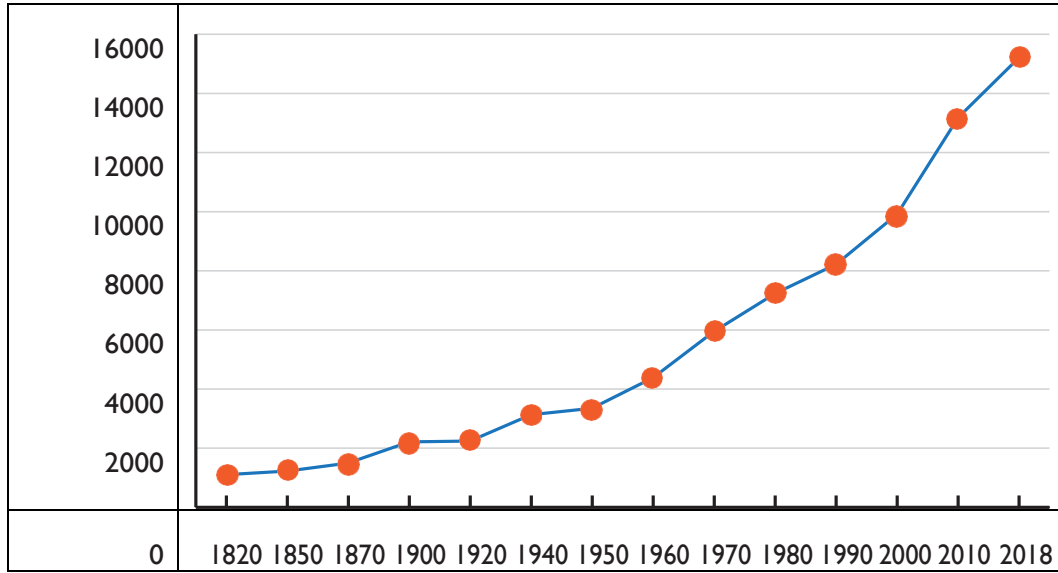
3.3 युद्धोत्तर बहुपक्षवाद के लाभांश

सुरक्षा के मोर्चे पर बहुपक्षवाद की विफलता के बावजूद वैश्विक शांति कायम रही, युद्ध के बाद के बहुपक्षवाद पर आर्थिक सहयोग हावी था, जो 1944 की मूल ब्रेटन वुड्स व्यवस्था से बहुत आगे तक फैल गया था जैसा कि पिछले खंड में बताया गया है। इसने वैश्विक समृद्धि के रूप में समृद्ध लाभांश का भुगतान किया।

सुरक्षा और आर्थिक सहयोग युद्ध के बाद के दो प्रमुख बहुपक्षवाद थे। पहले के राष्ट्र संघ की तरह, युद्ध के बीच की अवधि में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद शुरू से ही निष्क्रिय थी, जिसमें दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका का प्रतिनिधित्व नहीं था और द्वितीय विश्व युद्ध के अंत के बाद शीत युद्ध से दुनिया दो गुटों में विभाजित हो गई थी। नाटो और वारसाँ संधि में शामिल देशों के वीटो के उपयोग के माध्यम से एक-दूसरे को करने परास्त करने के साथ, सुरक्षा परिषद को केवल एक भव्य परिषद में बदल दिया गया और शांति सेना के द्वारा युद्धरत दलों में शांति स्थापित की गई। जबकि यूरोप के समायोजन की तरह बातचीत के लिए कोई मंच नहीं था, फिर भी नाटो और वारसाँ संधि की दो बहुपक्षीय व्यवस्थाओं के बीच शक्ति संतुलन ने सुनिश्चित किया कि क्षेत्रीय संघर्षों के बावजूद बड़े पैमाने पर वैश्विक शांति बनी रहे।

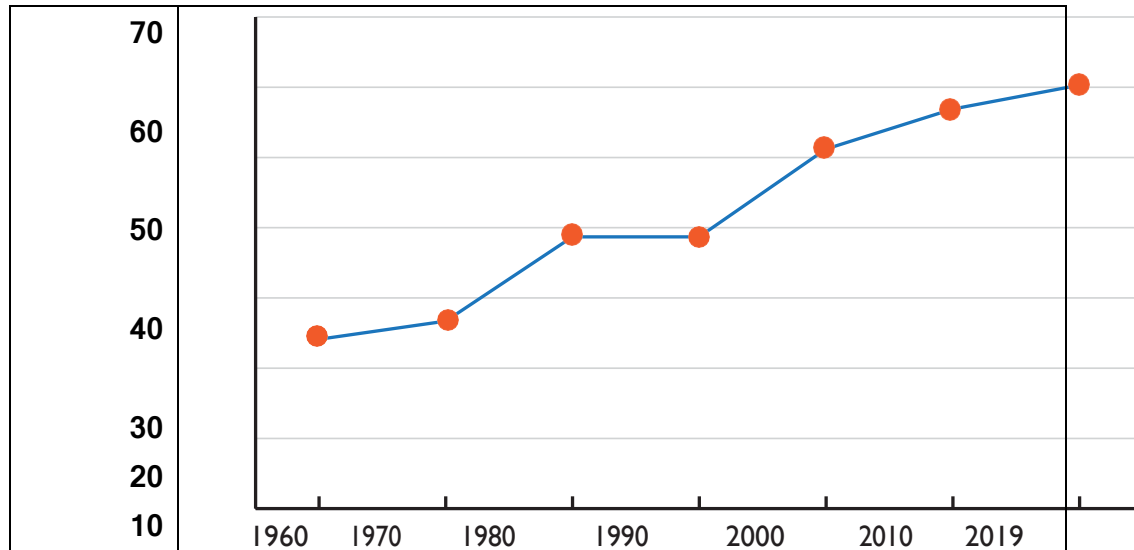
सुरक्षा के मोर्चे पर बहुपक्षवाद की विफलता के बावजूद वैश्विक शांति कायम रही, युद्ध के बाद के बहुपक्षवाद पर आर्थिक सहयोग हावी था, जो 1944 की मूल ब्रेटन वुड्स व्यवस्था से बहुत आगे तक फैल गया था जैसा कि पिछले खंड में बताया गया है। इसने वैश्विक समृद्धि के रूप में समृद्ध लाभांश का भुगतान किया। 1870 और 1950 के बीच प्रति वर्ष वैश्विक विकास का औसत लगभग 2 प्रतिशत था, जो 1950 और 2000 ईस्वी के बीच दोगुना बढ़कर लगभग 4 प्रतिशत हो गया (मैडिसन 2001)। प्रति व्यक्ति वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 1820 और 1950 के बीच के 130 वर्षों में तीन गुना बढ़ा था, 1950 के बाद से पिछले 70 वर्षों में इसमें पाँच गुना वृद्धि हुई है। यह वैश्विक व्यापार में शानदार वृद्धि से सुगम हुआ था। (ग्राफ 1 और 2)

1 पृष्ठ 261 पर दिए डेटा से लेखक की गणना



(GGDC 2020)

पृष्ठ 261 पर दिए डेटा से लेखक की गणना



4. युद्धोत्तर बहुपक्षवाद का संकट

युद्धोत्तर अवधि में वैश्विक विकास और व्यापार दोनों में तेजी आई, लेकिन यह जल्दी ही तेजी से उभरते बाजारों और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईडीएमई) के पक्ष में मुड़ गई, क्योंकि उन्नत अर्थव्यवस्थाएं (एई) पुरानी और

बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव*

धीमी हो गई थी।

युद्ध-पूर्व युग में प्रचलित मुक्त व्यापार के वैश्वीकरण ने साम्राज्यवादी शक्तियों के पक्ष में काम किया था, जिससे उनके और उनके औपनिवेशिक प्रभुत्व वाले क्षेत्रों के बीच आय का अंतर काफी बढ़ गया था। सीमा पार व्यापार में उनके अनुभव को देखते हुए जब उपनिवेशों ने युद्ध के बाद की अवधि में अपनी संप्रभुता प्राप्त कर ली, तो उनकी प्रवृत्ति अपने लघु उद्योगों को विकसित करने पर उनके साम्राज्यवादी आकाओं द्वारा अस्वीकार की गई सुरक्षात्मक दीवारें स्थापित करके अंदर मुड़ने की थी। 1970 के दशक में ब्रेटन वुड्स मार्क 1 के पतन और अस्थायी और विवेकाधीन विनिमय दरों के उद्भव के बाद, कुछ पूर्व उपनिवेशों ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं को खोलकर और अति-वृद्धि के लिए रास्ता बनाकर अपना तरीका बदल दिया। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि ने पूर्व साम्राज्यवादी शक्तियों के साथ आय अभिसरण में वृद्धि का नेतृत्व किया।

युद्धोत्तर अवधि में वैश्विक विकास और व्यापार दोनों में तेजी आई, लेकिन यह जल्दी ही तेजी से उभरते बाजारों और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईडीएमई) के पक्ष में मुड़ गई, क्योंकि उन्नत अर्थव्यवस्थाएं (ईई) पुरानी और धीमी हो गई थीं। कुल मिलाकर, सत्तर के दशक को छोड़कर-1995 तक देशों में विकास उच्च या वैश्विक औसत पर था - जिसके बाद गैर-ओईसीडी देशों ने तेजी से विकास करना शुरू कर दिया (विश्व बैंक_यू)। 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट (जीएफसी) से पहले 2002-07 के वैश्विक उछाल के दौरान यह प्रवृत्ति चरम पर थी, उस समय ईएमडीई ईई की तुलना में लगभग तीन गुना तेजी से बढ़े। हाजबकि जीएफसी के बाद की अवधि में विकास हर जगह धीमा रहा है, ईएमडीई अभी भी ईई की तुलना में लगभग ढाई गुना तेजी से बढ़ रही हैं।

इस अंतर वृद्धि ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में ईई और ईएमडीई के सापेक्ष भार को तेजी से बदल दिया है। 1960 में वैश्विक अर्थव्यवस्था का लगभग 80 प्रतिशत ओईसीडी देशों के पास था, और यह 1990 तक तक काफी स्थिर रहा(विश्व बैंक_यू)। तालिका 1 से पता चलता है कि पिछले तीन दशकों में, ईएमडीई की हिस्सेदारी में 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, हालांकि शुरू में उनकी वृद्धि कम मूल्य वाली विनिमय दरों से छिपी हुई थी, जिनकी प्रवृत्ति बाजार विनिमय दरों पर अपने शेयर को स्थिर रखने की थी। 2008 के जीएफसी के समय तक, ईई और ईएमडीई के पास वैश्विक अर्थव्यवस्था में समान हिस्सेदारी थी, इसे क्रय शक्ति की समानता पर मापा जाता था। ईई, वर्तमान में वैश्विक अर्थव्यवस्था का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा है, जो एक तिहाई उभरते और विकासशील एशिया (ईडीए) से थोड़ा ही अधिक है। विशेष रूप से 2001 में विश्व व्यापार संगठन में चीन के प्रवेश के कारण ईएमडीई के भीतर लगभग संपूर्ण लाभ ईडीए को प्राप्त हुआ है।

युद्धोत्तर अवधि में उन्नत (और पूर्व साम्राज्यवादी) अर्थव्यवस्थाओं ने वैश्वीकरण के लिए आक्रामक रूप से जोर लगाया था, जबकि पूर्व उपनिवेश अनिच्छुक उदारवादी थे। हालांकि, समय के साथ, ब्रेटन वुड्स मार्क 1 के पतन के बाद की अवधि में वैश्वीकरण और आय अभिसरण और अत्यधिक लाभ धीरे-धीरे वैश्वीकरण से ईई के मोहभंग का कारण बना। यह महसूस किया गया था कि ईएमडीई, विशेष रूप से उभरते और विकासशील एशिया (विशेषकर चीन) ने अधिकांश लाभ (तालिका 1) पर कब्जा कर लिया था, उन्होंने ब्रेटन वुड्स II के अंतर्गत अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए पश्चिमी बाजारों पर कब्जा करने के लिए विवेकाधीन विनिमय दर तंत्र का गलत इस्तेमाल किया, जो बड़े पैमाने पर गैर-औद्योगिकीकरण और ब्लू-कॉलर नौकरियों के नुकसान का कारण बना। बढ़ते वैश्विक असंतुलन, असमानता, बेरोजगारी और ईई में स्थिर वास्तविक मजदूरी को अनुचित व्यापार और वैश्वीकरण के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था। इसने ईई को व्यापार और जलवायु परिवर्तन वार्ता दोनों में अधिक विकसित ईएमडीई के लिए विशेष व्यवस्था को स्वीकार करने का कम इच्छुक बनाया और ब्रेटन वुड्स संस्थानों के बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव*

विश्व मामलों की भारतीय परिषद संसाधनों और उनके भीतर रियायती खिड़कियों को बढ़ाने की उनकी क्षमता और इच्छा को भी बाधित किया, विशेष रूप से तब, जब वे विकास की घटती प्रवृत्ति और बढ़ती आबादी के कारण बढ़ते राजकोषीय दबाव में आ रहे थे। यूएनडीपी, डब्ल्यूएचओ, एफएओ आदि जैसे विभिन्न सहायक संगठनों के माध्यम से प्रशासित सहायता के साथ सबसे गरीब लोगों की आजीविका के लिए वित्तीय सहायता में भी गिरावट आई है। इसके परिणामस्वरूप दोहा दौर की व्यापार वार्ता के अंतर्गत विश्व व्यापार संगठन और यूएनएफसीसीसी में उत्सर्जन लक्ष्यों और जलवायु परिवर्तन शमन और अनुकूलन के लिए धन को लेकर गतिरोध पैदा हुआ।

तालिका 1

आर्थिक विकास और व्यापार: औसत वार्षिक विकास

वर्ष	विश्व	एई	ईएमडीई	व्यापार
1980-90	3.2	3.1	3.3	4.8
1990-00	3.3	2.9	3.8	7.1
2002-07	4.8	2.6	7.2	7.7
2011-19	3.6	1.9	4.8	3.7

बाजार विनिमय दरों पर वैश्विक अर्थव्यवस्था का हिस्सा

	1980	1990	2000	2010	2020
एई	75.7%	77.9%	79.1%	65.5%	59.4%
ईएमडीई	24.3%	22.1%	20.9%	34.5%	40.6%
ईडीए	6.7%	4.8%	6.9%	14.7%	25.1%

ऋय शक्ति समानता पर वैश्विक अर्थव्यवस्था का हिस्सा

एई	62.7%	63.2%	56.7%	46.3%	42.5%
ईएमडीई	37.3%	36.8%	43.3%	53.7%	57.5%
ईडीए	8.8%	12.4%	16.6%	25.6%	32.4%

संकेत:

एई-उन्नत अर्थव्यवस्थाएं

ईएमडीई- उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं

ईडीए- उभरता और विकासशील एशिया

(आईएमएफ 2020)

ब्रेटन वुड्स संस्थान और उन्हें सूचित करने वाला दो-अंतराल मॉडल, बड़े ईएमडीई के लिए तेजी से अप्रासंगिक हो

बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव*

गया, उन्होंने बड़े चालू खाता अधिशेषों को चलाकर एई को पूंजी का निर्यात करना शुरू कर दिया और बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा भंडार जमा किया जो आईएमएफ के पास उपलब्ध शक्ति से अधिक था। ईएमडीई केंद्रीय बैंकों के पास वर्तमान में लगभग 7.5 ट्रिलियन डॉलर का भंडार है, जो आईएमएफ के पास उपलब्ध 1 ट्रिलियन अमरीकीडॉलर के वित्तपोषण की कुल मारक क्षमता की तुलना में अधिक है (आर्सलान और कांतू 2019; आईएमएफ 2021बी)। पूंजी के ईएमडीई से एई की ओर ऊपर प्रवाह के साथ, 1996 और 2020 के बीच इन अर्थव्यवस्थाओं के पास सगभग 4.5 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर का एक संचयी चालू खाता अधिशेष था (आईएमएफ 2020)। जब जीएफसी का अनुसरण करते हुए उधार लेने की नई व्यवस्थाओं (एनएबी) और द्विपक्षीय समझौतों के माध्यम से आईएमएफ के संसाधनों को अंततः 250 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़ाकर 1000 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर कर दिया गया तब इसमें पहले के लगभग 25 प्रतिशत और बाद के पचास प्रतिशत का योगदान, ईएमडीई द्वारा दिया गया था। एनएबी में चीन तीसरा सबसे बड़ा योगदानकर्ता (अमेरिका और जापान के बाद) और द्विपक्षीय व्यवस्था (आईएमएफ 2021 बी) के अंतर्गत सबसे बड़ा ऋणदाता था। संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के लिए कुल योगदान में ब्रिक्स की हिस्सेदारी भी बढ़ी है यह 2008 और 2020 के बीच 5.6 प्रतिशत से 18.4 प्रतिशत हो गई है, जबकि जी-7 की हिस्सेदारी 69 से कम होकर 52 प्रतिशत गई है। 2020 में, संयुक्त राष्ट्र में संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दूसरा सबसे बड़ा योगदानकर्ता चीन था (जीपीएफ_यू) ।

तालिका 2

ब्रेटन वुड्स संस्थानों में आवाज और प्रतिनिधित्व

	आईएमएफ कोटा शेयर		विश्व बैंक मताधिकार	आर्थिक आईएमएफ	वजन फार्मुला
	2007	चालू			
जी-7	45.30	43.36	40.65	42.905	35.746
ब्रिक्स	11.49	14.80	13.2	15.989	21.178
चीन	3.99	6.39	4.69	7.917	12.855
अमेरिका	17.66	17.40	15.66	16.987	14.734

स्रोत: आईएमएफ और विश्व बैंक की वेबसाइटें

एशियाई ईएमडीई, विशेष रूप से तेजी से बढ़ते चीन में आय के तेजी से अभिसरण का अर्थ यह भी था कि ब्रेटन वुड्स संस्थानों में आवाज और प्रतिनिधित्व जो द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में प्रचलित सापेक्ष आर्थिक भार को प्रतिबिंबित करता था, तेजी से बेमेल हो गया था। कोटा पुनर्वितरण के बावजूद, आईएमएफ के अपने फार्मूले के मापदंड से भी चीन की मतदान शक्ति उसके आर्थिक वजन से बहुत कम है।

बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव*

बहुपक्षवाद के युद्धोत्तर संकट की उत्पत्ति का कारण जी-7 के प्रभुत्व वाली बहुपक्षीय व्यवस्था की वैश्विक अर्थव्यवस्था में बदलते आर्थिक वजन को समायोजित करने की अनिच्छा से उत्पन्न व्यवस्था के मौजूदा संस्थानों की वैधता के नुकसान; व्यापार और जलवायु वार्ता दोनों में 'साझा लेकिन अलग-अलग जिम्मेदारियों/व्यवहार' के अपने विशेष विशेषाधिकारों को छोड़ने में ईएमडीई की अनिच्छा; और विशेष रूप से तेजी से उभरते एशिया के लिए ब्रेटन वुड्स संस्थानों की बढ़ती अप्रासंगिकता में निहित हैं। वैधता के इस नुकसान के कारण वैकल्पिक ईएमडीई संस्थानों का उदय हुआ जिन्होंने जी-7 (ब्रिक्स), आईएमएफ (सीएमआईएम) और विश्व बैंक (एनडीबी, एआईआईबी, बीआरआई) की नकल करने का प्रयास किया और इक्कीसवीं सदी में, जी 20 के साथ बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग की एक नई शासन संरचना निर्मित हुई।

5. जी-20 और बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग

ईएमडीई के सापेक्ष आर्थिक आकार में बढ़ने के साथ, वैश्विक व्यापार और वित्तीय प्रवाह में उनके हिस्से में तेजी से वृद्धि हुई है। आर्थिक और वित्तीय संकटों का दायरा अधिक वैश्विक हो गया।

जब तक ईएमडीई एई के आर्थिक आकार से अपेक्षाकृत छोटा रहा, और अधिकांश व्यापार और वित्तीय प्रवाह एई के भीतर रहे, तब तक वास्तव में जी-7 देशों को ईएमडीई के सहयोग की आवश्यकता नहीं थी। आर्थिक और वित्तीय संकटों को उनकी घरेलू मैक्रोइकॉनॉमिक नीतियों और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजारों के विनियमन के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता था, जिन पर जी-7 देशों का प्रभुत्व था। वित्तीय स्थिरता मंच अंतर्राष्ट्रीय वित्त के मुद्दों को संबोधित करने वाला बहुपक्षीय संगठन था, जबकि ओईसीडी आर्थिक नीतियों और सीमा पार कराधान संबंधी मामलों का समन्वय करता था। जब एई में संकट आया तो ये ईएमडीई में फैल गए। इस तरह के फैलाव से उत्पन्न होने वाली ईएमडीई की बाहरी वित्तीय जरूरतों को ब्रेटन वुड्स संस्थानों द्वारा पूरा किया गया था।

हालांकि, ईएमडीई के सापेक्ष आर्थिक आकार में बढ़ने के साथ, वैश्विक व्यापार और वित्तीय प्रवाह में उनके हिस्से में तेजी से वृद्धि हुई है। आर्थिक और वित्तीय संकटों का दायरा अधिक वैश्विक हो गया। जून 1997 में थाईलैंड में शुरू हुआ एशियाई वित्तीय संकट इंडोनेशिया, कोरिया, रूस, ब्राजील में फैल गया और हेज फंड दीर्घकालिक पूंजी प्रबंधन के पतन के साथ यह संयुक्त राज्य अमेरिका में भी फैल गया। अब यह समझ में आ गया था कि बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग का मौजूदा जी-7 वर्चस्व वाला क्रम अब वैश्वीकृत वित्त की एक नई दुनिया में आर्थिक वित्तीय स्थिरता प्रदान नहीं कर सकता है। परिणामस्वरूप, इक्कीसवीं सदी के आरंभ में जी-20 को, वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के स्तर पर एक नए बहुपक्षीय समूह के रूप में गठित किया गया था (किर्टन 2013)। इसके बाद, जून 2007 में जर्मनी के हेलीगेंडाम में जी7/जी-8 शिखर सम्मेलन ने जी-7 शिखर सम्मेलन की तर्ज पर चीन, भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और मैक्सिको के साथ एक विषयगत संवाद स्थापित किया। तथाकथित "हेलीगेंडम प्रक्रिया"

² वाशिंगटन डीसी, लंदन, पिट्सबर्ग, टोरंटो और सियोल में पहले पांच शिखर सम्मेलनों में जी-20 नेताओं के वक्तव्य देखें।

जी7/जी-8 सदस्यों द्वारा समूह के प्रतिनिधित्व और प्रभावशीलता की कथित कमी का जवाब देने के लिए एक प्रयास था।

जी-20 के प्रशासन ढांचे ने युद्ध के बाद की अवधि में वैश्विक बहुपक्षीय क्रम में हुए विवर्तनिक बदलावों का संज्ञान लिया, जिसमें मौजूदा व्यवस्थित रूप से महत्वपूर्ण देशों को शामिल करने के लिए विकसित और विकासशील दोनों तरह के देशों को शामिल किया गया, जो कुल मिलाकर वैश्विक आय, व्यापार और वित्तीय प्रवाह, कार्बन उत्सर्जन और जनसंख्या के 70-80% के लिए जिम्मेदार थे।

जी-20 के प्रशासन ढांचे ने युद्ध के बाद की अवधि में वैश्विक बहुपक्षीय क्रम में हुए विवर्तनिक बदलावों का संज्ञान लिया, जिसमें मौजूदा व्यवस्थित रूप से महत्वपूर्ण देशों को शामिल करने के लिए विकसित और विकासशील दोनों तरह के देशों को शामिल किया गया, जो कुल मिलाकर वैश्विक आय, व्यापार और वित्तीय प्रवाह, कार्बन उत्सर्जन और जनसंख्या के 70-80% के लिए जिम्मेदार थे। 2008 में आए वैश्विक वित्तीय संकट के समय इस मंच को नेताओं के स्तर तक बढ़ा दिया गया था। इस समय तक सबसे बड़े द्विपक्षीय वैश्विक असंतुलन स्वयं जी 20 द्वारा पहचाने गये 2008 जीएफसी के दो मुख्य कारणों में से एक जी-7 के बाहर के चीन को शामिल करना था (जी-20 आईसी_यू2)। इसका दूसरा पहलू आई और ईएमडीई के बीच सीमा पार बढ़ा पूंजी प्रवाह था। आईएमएफ ने पहले इन असंतुलनों को अस्थिर और वैश्विक अर्थव्यवस्था की अस्थिरता के एक प्रमुख चिंता और स्रोत के रूप में चिह्नित किया था (आईएमएफ 2007)। हालाँकि, यह इसके बारे में कुछ भी करने में असमर्थ रहा था क्योंकि इसे विकासशील देशों का विश्वास और भरोसा प्राप्त नहीं था, इसे एक तटस्थ मध्यस्थ के बजाय मुख्य रूप से जी-7 का एक उपकरण माना जाता था। जी-7 'शर्तों' के माध्यम से अपनी इच्छाएं केवल उन देशों पर थोप सकता है जो धन के लिए आईएमएफ से संपर्क करते हैं। हालांकि प्रमुख एशियाई अर्थव्यवस्थाएं बाहरी संकटों के खिलाफ स्व-बीमित थीं और अपने व्यापक विदेशी मुद्रा भंडार और अचानक रुकावट के लिए उन्हें अब आईएमएफ में जाने की आवश्यकता नहीं थी।

जी-20 नेताओं ने पिट्सबर्ग में अपने तीसरे शिखर सम्मेलन में ब्रेटन वुड्स संस्थानों और विश्व व्यापार संगठन और यूएनएफसीसीसीसी जैसी अन्य विषयगत एजेंसियों के माध्यम से संचालित वैश्विक अर्थव्यवस्था के संचालन समूह के रूप में जी-7 को प्रभावी ढंग से हटा कर जी-20 को वैश्विक आर्थिक सहयोग के प्रमुख बहुपक्षीय मंच के रूप में उन्नत किया। ये संस्थान पहले की तरह काम करते रहे, लेकिन अब जी-7 के बजाय अधिक समावेशी जी-20 के समय मार्गदर्शन में काम करते थे।

जी-20, विश्व व्यापार संगठन और यूएनएफसीसीसीसी जैसी मॉडल 2 बहुपक्षीय संस्था है जहां सभी सदस्य समान स्तर पर हैं। साथ ही, जी-7 और यूरोप के समायोजन की तरह, यह वैश्विक नेताओं और उनके निजी प्रतिनिधियों (शेरपा) के लिए शिखर स्तर पर अनौपचारिक रूप से आमने-सामने बातचीत करने के लिए एक ठोस अनौपचारिक मंच है। वे आम सहमति के आधार पर बयान जारी करते हैं, लेकिन ये डब्ल्यूटीओ और यूएनएफसीसीसीसी जैसे मॉडल 2 संस्थानों में हुए समझौतों के विपरीत कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं हैं। विषय आधारित बहुपक्षीय मंचों पर जी-20 की सहमत लचीली प्रक्रियात्मक प्रक्रिया का स्पष्ट लाभ है, और उभरते वैश्विक संकटों से निपटने में विशिष्ट मुद्दे पर तदर्थ शिखर सम्मेलनों की तुलना में अधिक सफलता की संभावना है, जिसमें कोई पूर्व ढांचा नहीं

बहुपक्षवाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था और जी-20 का उद्भव*

है, क्योंकि यह जिन मुद्दों को उठा सकता है, वे परिभाषित नहीं हैं (लासक्यूरेट्स 2017)।

जी-20, विश्व व्यापार संगठन और यूएनएफसीसीसी जैसी मॉडल 2 बहुपक्षीय संस्था है जहां सभी सदस्य समान स्तर पर हैं। साथ ही, जी-7 और यूरोप के समायोजन की तरह, यह वैश्विक नेताओं और उनके निजी प्रतिनिधियों (शेरपा) के लिए शिखर स्तर पर अनौपचारिक रूप से आमने-सामने बातचीत करने के लिए एक ठोस अनौपचारिक मंच है।

पहला जी-20 शिखर सम्मेलन 2008 के जीएफसी के तत्वावधान में वाशिंगटन डीसी में आयोजित किया गया था, और जी-20 के नेता अब सालाना बैठक करते हैं। 2007-08 में तेजी से विकसित होने वाले जीएफसी को संबोधित करने के लिए आर्थिक नीतियों का समन्वय करना, जी-20 के वित्त मंत्रियों और सेंट्रल बैंक के गवर्नरों के (एफएमसीबीजी) समूह को नेताओं के स्तर तक ऊपर उठाने के लिए निकटतम प्रेरणा था, जब दुनिया बैरल को घूरता ऐसा प्रतीत हो रही थी, यह 1930 के दशक की महामंदी के बाद से सबसे खराब आर्थिक और वित्तीय संकट था (ईचेनग्रीन और ओ'रूके 2010)। यद्यपि शिखर सम्मेलनों में कोई कानूनी रूप से बाध्यकारी प्रतिबद्धता नहीं थी, फिर भी मौद्रिक, राजकोषीय, व्यापार और वित्तीय नीतियों पर नीति समन्वय उभरते संकट को कुंठ करने में प्रभावी था। प्रमुख ईएमडीई ब्रेटन वुड्स संस्थानों की तुलना में जी-20 में अधिक व्यस्त थे क्योंकि अब वे खुद को जी-20 के बहुपक्षीय आर्थिक प्रशासन के ढांचे में समान हितधारकों के रूप में देखते थे। जिसे जी-7 के प्रभुत्व वाले वित्तीय स्थिरता फोरम में सभी जी-20 देशों को सदस्यों के रूप में शामिल करके वित्तीय स्थिरता बोर्ड के रूप में पुनर्गठित किया गया था। सितंबर 24-25, 2009 को पिट्सबर्ग में आयोजित तीसरे शिखर सम्मेलन के समय तक, नेता अपने बयान में घोषणा कर सकते थे कि उनकी आर्थिक नीति समन्वय ने "काम" किया था। दूसरी महामंदी को टालने के बाद, जी-20 ने अब व्यापार, जलवायु परिवर्तन और ब्रेटन वुड्स संस्थानों की प्राचीन शासन संरचना जैसे बहुपक्षीय आर्थिक संस्थानों में प्रमुख संरचनात्मक दोषपूर्ण-रेखाओं को संबोधित करने पर अपना ध्यान केंद्रित किया। एक उम्मीद थी कि चूंकि एई और ईएमडीई अब नए बहुपक्षीय आर्थिक ढांचे में समान हितधारक थे, इससे पुराना उत्तर-दक्षिण विभाजन धुंधला हो जाएगा और उन क्षेत्रों में एक नई आम सहमति बन जाएगी जहां मौजूदा संस्थानों में बहुपक्षीय सहयोग रुक गया था, जैसे कि दोहा दौर के अंतर्गत व्यापार उदारीकरण, यूएनएफसीसीसी जलवायु परिवर्तन वार्ता, और वैश्विक असंतुलन में सहमति नहीं बन पाई थी। मैक्रोइकॉनॉमिक नीतियों के समन्वय और वैश्विक वित्त में सुधार के लिए उल्लेखनीय सहमति भविष्य के लिए शुभ संकेत है।

हालांकि, जी-20 को लंबे समय से चले आ रहे मुद्दों को हल करने में कम सफलता मिली है, जिससे यह आभास होता है कि यह संकट से लड़ने वाले तंत्र के रूप में अधिक प्रभावी है, जब देश सामान्य समय में बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग के मंच की तुलना में अस्थायी रूप से अपने मतभेदों को दूर करने के लिए इच्छुक होते हैं। हालांकि, जी-20 के भीतर पुरानी उत्तर-दक्षिण दोषपूर्ण रेखाएँ जी-20 के भीतर अधिक स्थायी साबित हुई हैं। ईएमडीई ब्रेटन वुड्स (मॉडल 1) संस्थानों में निपटाए गए मुद्दों पर जी-20 में शामिल होने के इच्छुक थे, जहां वे अधीनस्थ स्थिति में थे। हालांकि, वे मॉडल 2 संस्थानों में निपटाए जाने वाले मुद्दों, जैसे विश्व व्यापार संगठन के दोहा दौर में व्यापार, और यूएनएफसीसीसी के भीतर जलवायु परिवर्तन पर शामिल होने के लिए कम इच्छुक थे। मूल मंच ऐसे मामलों में उनकी पसंद का वार्ता मंच बना रहा, क्योंकि उन्होंने इन संस्थानों में गठजोड़ के माध्यम से विशेष प्रावधान पर बातचीत की थी। प्रमुख ईएमडीई को समान हितधारकों के रूप में शामिल करने से उनके लिए दावा करना और जी-

7 देशों के लिए जी-20 में ऐसे मुद्दों पर विशेष विशेषाधिकारों को स्वीकार करना अधिक कठिन हो गया। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ के बीच वित्तीय विनियमन और वित्तीय विवेक जैसे मुद्दों पर कुछ असहमति के बावजूद, जी-7 ने अनौपचारिक रूप से अपनी स्थिति का समन्वय करके जी-20 के भीतर एक दबाव समूह के रूप में काम करना जारी रखा। प्रमुख ईएमडीई ने जी-20 बैठकों में एक-दूसरे को सम्मानित भी किया।

आपसी विश्वास से पुराने विभाजन को पाटने में कुछ समय लगेगा, क्योंकि ईएमडीई के बीच यह भावना है कि जी-7 देश जी-20 प्रक्रिया के माध्यम से व्यापार और जलवायु परिवर्तन पर अपने चर्चित लाभ को वापस लेने की कोशिश कर रहे हैं। फिर भी, ईई और ईएमडीई के भीतर विशिष्ट मुद्दों पर आंतरिक मतभेदों को अब एक सामान्य मंच पर प्रसारित किया जाता है कि अब कम से कम सिद्धांत में एक न्यायसंगत शासन संरचना है। इस प्रकार, अमेरिका और यूरोपीय संघ में वित्तीय नियामक सुधार, व्यापार और राजकोषीय नीतियों पर भिन्नता थी। अमेरिका ने यूरोपीय संघ की तुलना में ब्रेटन वुड्स संस्थानों के शासन में सुधार पर अधिक आक्रामक तरीके से जोर दिया। चीन और अन्य ईएमडीई के हित भी व्यापार और विनिमय दर नीतियों पर अभिसरण युक्त नहीं हैं। ऐसे मतभेदों को एक साझा मंच पर प्रसारित करने से अधिक विश्वास को बढ़ावा मिलता है। समय के साथ आपसी जिम्मेदारी की भावना भी विकसित होनी चाहिए क्योंकि जी-20 के सभी सदस्य मध्यम से उच्च आय वाले देश हैं और उन्हें गरीबों, विशेष रूप से अफ्रीकी देशों के हितों को ध्यान में रखने की जरूरत है, जिन्हें संचालन समिति में कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है।



चीन और जर्मनी (यूरोपीय संघ के समीप) ने जी-20 के उद्भव से भू-राजनीतिक कद में सबसे अधिक लाभ प्राप्त किया है, क्योंकि ये देश अमेरिका के साथ-साथ प्रमुख खिलाड़ियों के रूप में उभरे हैं, किसी भी प्रमुख जी-20 पहल के प्रभावी होने के लिए इनका साथ होना आवश्यक है। अमेरिका और यूरोपीय संघ जी-7 का हिस्सा थे, जबकि

ब्रेटन वुड्स संस्थानों में मामूली भूमिका रखनेवाले चीन का बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग की प्रमुख संस्था में एक प्रमुख शक्ति की स्थिति में प्रवेश हुआ है, इसकी शासन संरचना में एक बड़ा बदलाव है। चीन के नेतृत्व के दावों को कोविड-19 महामारी द्वारा बढ़ाया गया है, ऐसा लगता है कि एई और ईएमडीई दोनों के रूप में भी इसकी मजबूत आर्थिक सुधार के द्वारा उन्होंने पश्चिम की तुलना में बेहतर तरीके से संभाला है।

6. आगे की चुनौतियाँ: युद्धोत्तर बहुपक्षवाद का निरंतर संकट

जी-20 के उद्भव के साथ ऐसा प्रतीत हुआ कि बहुपक्षवाद के युद्ध के बाद के संकट को वैश्विक आर्थिक शासन की ब्रेटन वुड्स संरचना के बाद एक अधिक समावेशी माध्यम से क्षीण कर दिया गया था। दुनिया की नई संचालन समिति ने संकट की अवधि के दौरान एक संभावित दूसरी महामंदी और पोषित वैश्वीकरण को रोक दिया है, जब देशों के सुरक्षात्मक राष्ट्रवादी दीवारों के पीछे हट जाते हैं। व्यवस्थित रूप से सभी महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं के नेता अब हर साल अनौपचारिक रूप से दिन की सबसे जरूरी समस्याओं पर आम सहमति बनाने के लिए बैठक करते हैं और ब्रेटन वुड्स संस्थानों सहित सभी प्रमुख बहुपक्षीय निकायों को मार्गदर्शन प्रदान करने वाले वक्तव्य जारी करते हैं।

हालांकि, हाल के वर्षों में इनमें से अधिकतर लाभ कम हो गए हैं। शुरुआती ठहराव समझौतों के बाद, वैश्विक व्यापार कम हो गया है। कोविड-19 महामारी के कारण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के विघटन और पुनर्संरक्षण और श्रम की सीमा पार आवाजाही के कारण यह इसमें कमी आ गई है। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प ने वैश्वीकरण से युद्ध की घोषणा की थी। जबकि नए राष्ट्रपति बिडेन ने बहुपक्षवाद पर लौटने के अपने इरादे का संकेत दिया है, पर जमीनी हकीकत नहीं बदली है। कई अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर ट्रांस अटलांटिक विवाद के कारण चीन के साथ व्यापार युद्ध अब भी जारी है। ब्रेक्सिट ने यूरोप में बहुपक्षवाद को कमजोर कर दिया है। जिन दो देशों ने युद्ध के बाद की अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को रेखांकित किया था, वे बहुपक्षवाद को कमजोर कर रहे हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प ने वैश्वीकरण से युद्ध की घोषणा की थी। जबकि नए राष्ट्रपति बिडेन ने बहुपक्षवाद पर लौटने के अपने इरादे का संकेत दिया है, पर जमीनी हकीकत नहीं बदली है। कई अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर ट्रांस अटलांटिक विवाद के कारण चीन के साथ व्यापार युद्ध अब भी जारी है।

बहुपक्षवाद के बजाय वैश्वीकरण के लिए एक उप-इष्टतम प्रतिक्रिया, बहुपक्षवाद, आज की व्यवस्था बन गया है, पार-प्रशांत साझेदारी पर व्यापक और प्रगतिशील समझौता (जिससे मूल वास्तुकार, अमेरिका, पीछे हट गया है), प्रस्तावित ट्रांसाटलांटिक ट्रेड एंड इन्वेस्टमेंट पार्टनरशिप (टीटीआपी), (जिससे मूल प्रस्तावक, अमेरिका, एक बार फिर बाहर हो गया है), एशिया में क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (आरसीईपी), जिससे दूसरी सबसे बड़ी एशियाई अर्थव्यवस्था, अर्थात् भारत बाहर है, ब्रिक्स ने न्यू डेवलपमेंट बैंक (एनडीबी) और चीनी बेल्ट एंड रोड (बीआरआई), चियांग माई इनिशिएटिव मल्टीलेटरलाइज़ेशन (सीएमआईएम), और एशियन इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक (एआईआईबी) जैसी पहलों को प्रायोजित किया है। ये लड़खड़ाते बहुपक्षवाद की प्रतिक्रियाएँ हैं। दुनिया की सबसे बड़ी

अर्थव्यवस्थाएं अमेरिका और चीन दोनों इनमें से किसी भी पहल में शामिल नहीं हैं। एक लंबे समय से निष्क्रिय यूएनएससी के साथ, दुनिया की मौजूदा महाशक्ति और दक्षिण चीन सागर में बढ़ते टकराव के बीच एक नए शीत युद्ध का विचित्र दृष्टिकोण उभर रहा है, जिसमें दुनिया लड़खड़ाते लोकतंत्रों के अमेरिकी नेतृत्व वाले गठबंधन और थ्यूसीडाइड्स ट्रैप के एक उत्कृष्ट चित्रण में चीन के नेतृत्व वाले मजबूत राज्यों के गठबंधन शामिल हैं (रकमैन 2021)। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि यूरोप भी इस तरह के गठबंधन में शामिल होगा या नहीं।

जी-20 को शिखर सम्मेलन से शिखर सम्मेलन तक दोहराए जाने वाले बेतुके बयानों तक सीमित कर दिया गया है, साथ ही साथ उच्च-स्तरीय द्विपक्षीय बैठकों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

जी-20 को शिखर सम्मेलन से शिखर सम्मेलन तक दोहराए जाने वाले बेतुके बयानों तक सीमित कर दिया गया है, साथ ही साथ उच्च-स्तरीय द्विपक्षीय बैठकों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। रियाद में हुआ अंतिम शिखर सम्मेलन एक आभासी शिखर सम्मेलन था। इस बात की संभावना बनी रहती है कि जब तक प्रमुख जी-20 देश हर वर्ष आमने-सामने की बैठकों में मूल्य नहीं देखते, यूरोप के कंसर्ट की अनौपचारिक बैठकें अनियमित हो सकती हैं। जी-20 को शिखर स्तर से नीचे भी गिराया जा सकता है। ट्रम्प के राष्ट्रपतित्व में बढ़ते ट्रान्साटलांटिक विवाद ने भी जी-7 वैश्विक शासन मॉडल की प्रधानता को उलटने से रोक दिया। क्या यह सुरक्षात्मक, राष्ट्रवादी दीवारों के पीछे अटके हुए देशों के एक नए युग की शुरुआत का पूर्वाभास देता है?

वैश्वीकरण विरोधी प्रवृत्ति और उदार लोकतंत्र की वापसी उस आर्थिक राष्ट्रवाद की याद दिलाती है जिसने औपनिवेशिक युग को समाप्त कर दिया, यह विकास के अस्थिर उच्च लागत 'आयात प्रतिस्थापन औद्योगीकरण (आईएसआई)' मॉडल के साथ समाप्त हुआ।

वैश्वीकरण विरोधी प्रवृत्ति और उदार लोकतंत्र की वापसी उस आर्थिक राष्ट्रवाद की याद दिलाती है जिसने औपनिवेशिक युग को समाप्त कर दिया, यह विकास के अस्थिर उच्च लागत 'आयात प्रतिस्थापन औद्योगीकरण (आईएसआई)' मॉडल के साथ समाप्त हुआ। पूर्वी एशियाई बाघ थ, और फिर चीन, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कल्याण को बढ़ाने वाले संपर्क में वापस लौट आए। ऐसा लगता है कि इतिहास ने भूमंडलीकरण का बचाव करने वाले पूर्व उपनिवेशों के साथ पूर्ण चक्र बदल दिया है, भले ही मूल प्रस्तावक इससे मुंह मोड़ लेते हैं। इसमें इतिहास का एक सबक है। एक कम बढ़ती, उच्च लागत वाली अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण पर वापस लौटने का कठोर परिणाम है।

हालांकि इतिहास की यात्रा शायद ही कभी रैखिक होती है। वैश्वीकरण की उत्पत्ति और दृढ़ता, और जब भी यह पीछे हटती है हर बार नए जोश के साथ वापस उछाल लेती है (शील 2008), जो अर्थशास्त्री डेविड रिकार्डो द्वारा दो सदी पहले वर्णित व्यापार के कल्याणकारी प्रभावों के निर्विवाद मामले में निहित है। इसके विस्तार के साथ मजबूत वृद्धि हुई है, और ठहराव के साथ इसकी वापसी हुई है। इसके कल्याणकारी लाभ अल्पकालिक विघटनकारी प्रभावों से आगे निकल जाते हैं। वैश्वीकरण के खिलाफ मौजूदा ज्वार के बावजूद, भविष्य के अलग होने की संभावना नहीं है। वैश्वीकरण का ढहना किसी भी मामले में अतिरंजित है (टेट 2020; शील 2017)। मानव सरलता लंबे समय से नए बुनियादी ढांचे का आविष्कार कर रही है जो निकट वैश्विक एकीकरण की सुविधा प्रदान करता है। उत्पादन अधिक वैश्विक हो गया है और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के माध्यम से परस्पर जुड़ा हुआ है। सीमाओं के पार सेवाओं

का कारोबार तेजी से हो रहा है। सोशल मीडिया एक वैश्विक नागरिक समाज को जन्म दे रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी में तेजी से प्रगति नए आभासी संबंध, सर्वदेशीय पहचान और समुदायों का निर्माण कर रही है जो राष्ट्र राज्य की सीमाओं के भीतर के लोगों से प्रतिस्पर्धा और संघर्ष करते हैं। दुनिया ऐसे राजनेताओं की प्रतीक्षा कर रही है जो इस मामले को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकें और अपने निर्वाचन क्षेत्रों में वैश्वीकरण के लाभों का दोहन कर सकें।

हम यहाँ से कहाँ जाएँ, और क्या इतिहास एक मार्गदर्शक हो सकता है?

उभरती शक्तियाँ "साझा विश्वासों और जिम्मेदारियों" की किसी जी-7 धारणा के माध्यम से नहीं बल्कि मौजूदा आधिपत्य के विरोध के माध्यम से एकजुट होती हैं क्योंकि वे सभी नए क्रम में ध्रुवीय स्थिति पाने के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं।

सबसे पहले, अपने वर्तमान स्वरूप में, जी-20 जी-7, ब्रिक्स और एमआईकेटीए (मेक्सिको, इंडोनेशिया, दक्षिण कोरिया, तुर्की और ऑस्ट्रेलिया) जैसे के दबाव समूह-ए के गठबंधन के रूप में काम करता है। केवल जी-7 में साझा जिम्मेदारी की भावना है। ब्रिक्स अभी भी "साझा लेकिन अलग-अलग जिम्मेदारियों" का तर्क देता है जो समान और इष्टतम वैश्विक परिणामों के लिए जी-7 पर लगातार दबाव डालता है। उभरती शक्तियाँ "साझा विश्वासों और जिम्मेदारियों" की किसी जी-7 धारणा के माध्यम से नहीं बल्कि मौजूदा आधिपत्य के विरोध के माध्यम से एकजुट होती हैं क्योंकि वे सभी नए क्रम में ध्रुवीय स्थिति पाने के लिए प्रतिस्पर्धा करती हैं। जी-30 और जी-77 में शामिल अफ्रीकी और निम्न-आय वाले देश, केवल उनके बहिष्कार के कारण ही नहीं, बल्कि बहुपक्षीय विकासशील देशों के ब्लॉकों के शेष सदस्य रहते हुए वैश्विक आर्थिक शासन की उच्च तालिका में शामिल शक्तियों के द्वारा अपने हितों का पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्व न करने के लिए जी-20 और इसके भीतर की बढ़ती शक्तियों के लिए आलोचक हैं। पुरानी शक्तियाँ खुले और उदार समारोहों में विश्वास करती हैं, लेकिन अब उनका वैश्वीकरण से मोहभंग होने लगा है क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि यह अब उनके लिए काम नहीं कर रहा है। जी-7 देशों में नागरिक समाज अपने को मूल लाभार्थी के बजाय वैश्वीकरण के शिकार के रूप में देखता है। बहुपक्षवाद के सफल होने के लिए, वैश्वीकरण को सभी के लिए काम करता हुआ देखा जाना चाहिए।

दूसरा, जी-20 मुख्य रूप से वैश्विक आर्थिक प्रशासन की एक प्रणाली है। यह बिल्कुल भी स्पष्ट नहीं है कि जी-20 इष्टतम समूह है या यूरोप की ठोस, अनौपचारिक महान शक्तियों को आगे बढ़ते समग्र बहुपक्षीय शासन का मॉडल बनना है। अधिक कॉम्पैक्ट जी-7/8 मॉडल के लिए प्रत्यावर्तन के अधिक प्रभावी होने की संभावना है, बशर्ते इसे पुनर्गठित किया जाए। चूंकि बहुपक्षीय निकायों में किसी सदस्य को बाहर करना लगभग असंभव है, और नए सदस्यों को शामिल करने पर आम सहमति विकसित करना बेहद मुश्किल है, इसलिए एक पूरी तरह से नए बहुपक्षीय निकाय की स्थापना एक अधिक व्यवहार्य प्रस्ताव है। 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में जर्मनी के साथ हुआ अनुभव वैश्विक प्रशासन के संस्थानों के भीतर बढ़ती शक्तियों को समायोजित नहीं करने के खतरों के बारे में इतिहास की एक चेतावनी है। अपने आर्थिक आकार और सैन्य क्षमता के आधार पर अमेरिका, यूरोपीय संघ (जर्मनी द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाएगा?), चीन, ब्रिटेन, जापान, रूस, भारत, ब्राजील और अफ्रीका का प्रतिनिधित्व ऐसे समूह के लिए संभावित महान शक्ति बनने के उम्मीदवार हैं।

तीसरा, युद्ध पूर्व बहुपक्षवाद ने राष्ट्र राज्यों की आंतरिक प्रणालियों के बारे में अज्ञेयवादी होने की वेस्टफेलियन परंपरा में विभिन्न विचारधाराओं के बावजूद प्रमुख शक्तियों को समायोजित किया। युद्ध के बाद बहुपक्षवाद हालांकि, उदार मूल्यों की आम सहमति पर आधारित था, जिस पर खुले बाजारों, खुले समाजों और अंतर्राष्ट्रीयकरण (जी 7 19753) में विश्वास करने वाली शक्तियों का प्रभुत्व था। मौलिक रूप से भिन्न मूल्यों की एक वैकल्पिक प्रतिद्वंद्वी प्रणाली मौजूद थी, लेकिन वेस्टफेलियन सिद्धांतों पर वैश्विक शासन की एकीकृत प्रणाली में सामंजस्य स्थापित करने के बजाय, दोनों प्रणालियां तब तक शीत युद्ध में थीं जब तक उनमें से एक ध्वस्त नहीं हो गई।

³ "हम साझा विश्वासों और साझा जिम्मेदारियों के कारण एकजुट हुए। हममें से प्रत्येक एक खुले, लोकतांत्रिक समाज की सरकार के लिए जिम्मेदार हैं, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक उन्नति के लिए समर्पित है। हमारी सफलता हर जगह लोकतांत्रिक समाज को मजबूत करेगी, जो वास्तव में जरूरी है।"

चीन, भारत, रूस और ब्राजील जैसी कई उभरती ताकतें, अंतरराष्ट्रीय बाजारों को खुला रखने में विश्वास करने वाले, उदार और राष्ट्रवादी हैं। राष्ट्र राज्यों की आंतरिक प्रणालियों के प्रति उनका अज्ञेयवाद वेस्टफेलियन राज्य की मूल धारणा के अनुरूप है, यहां तक कि प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) में बुनियादी सिद्धांतों के एक सेट के पालन की दिशा में समग्र सहमति विकसित हुई है।

चीन, भारत, रूस और ब्राजील जैसी कई उभरती ताकतें, अंतरराष्ट्रीय बाजारों को खुला रखने में विश्वास करने वाले, उदार और राष्ट्रवादी हैं। राष्ट्र राज्यों की आंतरिक प्रणालियों के प्रति उनका अज्ञेयवाद वेस्टफेलियन राज्य की मूल धारणा के अनुरूप है, यहां तक कि प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (एई) में बुनियादी सिद्धांतों के एक सेट के पालन की दिशा में समग्र सहमति विकसित हुई है। सोवियत संघ के पतन के बाद एक प्रमुख शक्ति होने के कारण रूस को जी-7 में शामिल किया गया था, लेकिन इसकी अनुदार प्रणाली के कारण विस्तारित जी-8 में लंबे समय तक नहीं रह सका। बहुपक्षीय शासन की उच्च तालिका में चीन और अन्य उभरती शक्तियों को समायोजित करने में भी यही दुविधा उत्पन्न होती है। यदि एक दूसरे शीत युद्ध से बचना है, तो बहुपक्षीय शासन की एकीकृत प्रणाली में समाज को संगठित करने के मौलिक रूप से दो भिन्न तरीकों की आवश्यकता होगी। क्या यह राष्ट्र राज्यों की आंतरिक नीतियों के संबंध में अज्ञेयवादी होने की पुरानी वेस्टफेलियन धारणा को उलट देगा, इसलिए युद्ध के बाद के बहुपक्षीय शासन के मौजूदा मॉडल से एक बड़ा विचलन देखा जाना बाकी है। मध्य-पूर्व में, वेस्टफेलियन विचार स्वयं कट्टरपंथी इस्लाम के साथ युद्ध में है जो इसे अस्वीकार करता है। हेनरी किसिंजर ने उल्लेख किया है, शक्ति के सभी प्रमुख केन्द्र वेस्टफेलियन प्रणाली की तत्वों का व्यवहार करते हैं, पर इसके सिद्धांतों पर सभी पक्षों द्वारा हमला किया जा रहा है, और कोई भी अपने को इसके सिद्धांत का स्वाभाविक रक्षक नहीं समझता है (किसिंजर 2015)।

चौथा, एक नए बहु-हितधारक बहुपक्षवाद को खोजने की आवश्यकता पड़ सकती है जो राष्ट्र-राज्यों के अनन्य संरक्षण के रूप में संप्रभुता की एक और वेस्टफेलियन धारणा से परे हो। राष्ट्र-राज्यों के बीच पारंपरिक युद्ध में कमी आई है, जिससे गैर-राज्य पक्षों को शामिल करने वाले संघर्ष को जगह मिली है। व्यापार, श्रम, बुनियादी ढांचे और वित्तीय क्षेत्र की नीतियों में परस्पर विरोधी उद्देश्यों के साथ पार-राष्ट्रीय पक्ष (टीएनसी) और संप्रभुओं के बढ़ते

दबदबे के बीच विरोधाभास हैं। भले ही टीएनसी अंतरराष्ट्रीय व्यापार और आधुनिक तकनीक को धरती पर हर झंडे में निर्बाध रूप से प्रसारित करने का प्रयास करते हैं, घरेलू राजनीति की मजबूरियां समय-समय पर राष्ट्र-राज्यों को अंदर की ओर मुड़ने और राष्ट्रवादी व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती हैं। कुछ बड़े गैर-सरकारी संगठनों और गैर-राज्य पक्षों की पहुंच, संसाधन और प्रभाव अब कई राष्ट्र राज्यों के समान और उससे भी अधिक हैं (मैथ्यूज 1997)। जी-20 को नागरिक समाज संगठनों से आदान लेने वाली प्रक्रियाओं को विकसित करके संप्रभुता को विभाजित करने की इस वास्तविकता को स्वीकार करना पड़ा है।

इन चार संघर्षों के समाधान से बहुपक्षवाद के भविष्य को आकार मिलने की संभावना है।

संदर्भ

(एडेलमैन और चेनेरी 1966) एडेलमैन, इरमा और चेनेरी, हॉलिस बी, विदेशी सहायता और आर्थिक विकास: ग्रीस का मामला। अर्थशास्त्र और सांख्यिकी की समीक्षा, अंक. XLVIII, नं. 1, फरवरी 1966.

(आर्सलान और कांतू 2019) आर्सलान, यावुज़ और कांतू, कार्लोस विदेशी मुद्रा भंडार का आकार, बीआईएस पेपर्स # 104, 31 अक्टूबर, 2019. <https://www.bis.org/publ/bppdf/bispap104.pdf>

(क्लॉजविट्ज़ 1989) क्लॉजविट्ज़, कार्ल वॉन, ऑन वॉर, माइकल हॉवर्ड और पीटर पारेट द्वारा संपादित और अनुवादित। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989.

(ईचेनग्रीन और ओ'रुर्क 2010) आइचेंग्रीन, बैरी और ओ'रुर्क, केविन, नया डेटा हमें क्या बताता है? Voxeu.org, 8 मार्च, 2010, <https://voxeu.org/article/tale-two-depressions-what-do-new-data-tell-us-february-2010-update>

(एज़ाकी 1975) एज़ाकी, मित्सुओ 1975 विदेशी सहायता के दो-अंतरालों के विश्लेषण पर, जर्नल ऑफ़ साउथ-ईस्ट एशियन स्टडीज़, अंक. 6. नं.2, 1975.

(फर्र 2005) फर्र, जेसन, प्वाइंट: द वेस्टफेलिया लेगेसी एंड द मॉडर्न नेशन-स्टेट, इंटरनेशनल सोशल साइंस रिव्यू, अंक. 80, नं. 3/4, 2005), पृ. 156-159

(जी 7 1975) रैंबौलेट की घोषणा, प्रथम जी 7 शिखर सम्मेलन, रैंबौलेट, फ्रांस, 17 नवंबर, 1975। जी 7 सूचना केंद्र, द मंक स्कूल, टोरंटो विश्वविद्यालय, कनाडा। http://www.g8.utoronto.ca/summit/1975_rambouillet/communique.html Undated

(जी 20 आईसी_यू) जी 20 सूचना केंद्र, द मंक स्कूल, टोरंटो विश्वविद्यालय, कनाडा। <http://www.g20.utoronto.ca/summits/index.html> Undated

(जीपीएफ_यू) ग्लोबल पॉलिसी फोरम, सदस्य राज्यों का आकलन संयुक्त राष्ट्र बजट का हिस्सा।
<https://www.globalpolicy.org/un-finance/tables-and-charts> on-un-finance/member-states-assessed-share-of-the-un-budget. html Undated

(किर्टन 2013) किर्टन, जॉन, जी-20 शिखर सम्मेलन सफलता सूचना केंद्र की व्याख्या करते हुए, मंक स्कूल ऑफ ग्लोबल अफेयर्स, टोरंटो विश्वविद्यालय, 2013।[http:// www.g20.utoronto.ca/biblio/kirton-aiia-2013.pdf](http://www.g20.utoronto.ca/biblio/kirton-aiia-2013.pdf)

(किसिंजर 2015) किसिंजर, हेनरी, विश्व व्यवस्था। राष्ट्रों और विश्व इतिहास के चरित्र पर विचार। पेंगुइन, 2015।

(आईएमएफ 2007) आईएमएफ, चीन, यूरो क्षेत्र, जापान, सऊदी अरब और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ वैश्विक असंतुलन पर बहुपक्षीय परामर्श की स्टाफ रिपोर्ट, 29 जून, 2007. <https://www.imf.org/external/np/pp/2007/eng/062907.pdf>

(आईएमएफ 2020) आईएमएफ के वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक डेटाबेस से प्राप्त डेटा, अक्टूबर 2020
<https://www.imf.org/en/Publications/WEO/weo-database/2020/October>

(आईएमएफ 2021ए) आईएमएफ, आईएमएफ ने अपनी उधार क्षमता को बनाए रखने के लिए कदम उठाए, प्रेस विज्ञप्ति संख्या. 21/4, 8 जनवरी, 2021. <https://www.imf.org/en/News/Articles/2021/01/08/pr214-imf-concludes-steps-to-maintain-its-lending-capacity>

(आईएमएफ 2021बी) आईएमएफ, आईएमएफ को अपना पैसा कहां से मिलता है, 17 फरवरी, 2021. <https://www.imf.org/en/About/Factsheets/Where-the-IMF-Gets-Its-Money>

(लास क्यूरेट्स 2017), लास क्यूरेट्स, कायली, द कन्सर्ट ऑफ यूरोप एंड ग्रेट पावर गवर्नेंस टुडे। उन्नीसवीं सदी की यूरोप की व्यवस्था नीति निर्माताओं को इक्कीसवीं सदी में अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के बारे में क्या सिखा सकती है? रैंड कॉर्पोरेशन, 2017.
[https://www.rand.org/content/dam/rand/pubs/perspectives/PE200/PE226/RAND_ PE226.pdf](https://www.rand.org/content/dam/rand/pubs/perspectives/PE200/PE226/RAND_PE226.pdf)

(मैडिसन 2001) मैडिसन, एंगस, द वर्ल्ड इकोनॉमी। एक सहस्राब्दी परिप्रेक्ष्य, ओईसीडी 2001. पृ. 28 और पृ.175.

(मैडिसन 2004) मैडिसन, एंगस, कंट्रॉर्स ऑफ़ द वर्ल्ड इकोनॉमी एंड द आर्ट ऑफ़ मैक्रो-मेजरमेंट 1500-2001। रगल्स व्याख्यान, आईएआरआईडब्ल्यू 28वां महा सम्मेलन, कॉर्क, आयरलैंड, अगस्त 2004.
<http://www.ggdc.net/maddison/oriindex.htm>

(जीजीडीसी 2020) मैडिसन प्रोजेक्ट डेटाबेस 2020, ग्रोनिंगन ग्रोथ एंड डेवलपमेंट सेंटर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ ग्रोनिंगन।
<https://www.rug.nl/ggdc/historicaldevelopment/maddison/releases/maddison-project-database-2020>

(मैथ्यूज 1997) मैथ्यूज, जे.टी., पावर शिफ्ट। विदेशी मामले 76(1), 1997. पृ. 50-66.

(ऑर्टिज़-ओस्पिन और बेलटेकियन_यू) ऑर्टिज़-ओस्पिना, एस्टेबन और बेलटेकियन, डायना, व्यापार और वैश्वीकरण, डेटा में हमारी दुनिया, द ऑक्सफ़ोर्ड-मार्टिन प्रोग्राम ऑन ग्लोबल डेवलपमेंट। [https://ourworldindata.org/trade and-globalization](https://ourworldindata.org/trade-and-globalization).

(रकमैन 2021) रकमैन, गिडोन एक दूसरा शीत युद्ध पहले पर नज़र रख रहा है। फाइनेंशियल टाइम्स, 29 मार्च, 2021. <https://www.ft.com/content/b724fbb0-6c62-4175-85c9-b17ac98dde7d> emailId=6061b0513b390a0004 ff45f0&se gmentId=7d033110-c776-45bf-e9f2-7c3a03d2dd26

(शील 2008) आलोक शील, वैश्वीकरण का एक संक्षिप्त इतिहास, द इकोनॉमिक टाइम्स, 25 जुलाई, 2008. <https://economictimes.indiatimes.com/a-brief-history-of-globalisation/articleshow/3276531.cms>

(शील 2017), आलोक शील, क्या वैश्वीकरण पीछे हट रहा है? मिंच, 9 मार्च, 2017.

(टेट 2020) टेट, जिलियन, वैश्वीकरण की मृत्यु की रिपोर्ट को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया है। फाइनेंशियल टाइम्स, 3 दिसंबर, 2020. <https://www.ft.com/content/4ab21d78-270f-4c92-b9ce-4adf75041005>

(विलियमसन 2004-05) विलियमसन, जॉन, द स्टैंडिंग हिस्ट्री ऑफ द वाशिंगटन कंसंस, *जर्नल ऑफ पोस्ट केनेसियन इकोनॉमिक्स* अंक. 27, नं. 2, विंटर, 2004-2005, पृ. 195-206

(वर्ल्ड बैंक_यू) <https://data.worldbank.org/indicator/NY.GDP.MKTP.KD> तारीख नहीं दी गई है।

(वर्ल्ड बैंक_U2), विश्व विकास संकेतक. <https://data.worldbank.org/indicator/NE.TRD.GNFS.ZS>



प्रो. आलोक शील

अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों में अनुसंधान की भारतीय परिषद में मैक्रोइकोनॉमिक्स में आरबीआई चेयर प्रोफेसर,

आलोक शील अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों में अनुसंधान की भारतीय परिषद (आईसीआरआईआईआर) में मैक्रोइकोनॉमिक्स के आरबीआई चेयर प्रोफेसर हैं। इससे पहले, वे चौतीस वर्षों (1982-2016) तक भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के सदस्य थे, उनका अंतिम पद भारत सरकार के सचिव के समकक्ष था। उन्होंने केंद्र और राज्य (केरल) दोनों सरकारों के अधीन कई महत्वपूर्ण कार्य किए हैं, जिसमें ट्रेजरी विभागों में कई कार्यकाल शामिल हैं, जहां उन पर बजट निर्माण और प्रबंधन तथा विश्व बैंक, आईएमएफ और यूएनडीपी जैसे बहुपक्षीय वित्तीय संस्थानों और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार के साथ संपर्क की जिम्मेदारी थी। उन्हें वाशिंगटन डीसी के भारतीय दूतावास में आर्थिक सलाहकार के रूप में राजनयिक अनुभव प्राप्त है और बाद में वे भूटान में सार्क विकास कोष के अध्यक्ष रहे। उनके पास प्रधान मंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के सचिव के रूप में मैक्रो-इकोनॉमिक पॉलिसी में वरिष्ठ स्तर पर कई वर्षों का अनुभव है और वे जी-20 में वित्त और शेरपा दोनों चैनलों में एक बहुपक्षीय वार्ताकार रहे हैं।

विश्व मामलों की भारतीय परिषद

उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा शेरवुड कॉलेज, नैनीताल में प्राप्त की, सेंट स्टीफंस कॉलेज, नई दिल्ली से इतिहास में बीए (ऑनर्स), ब्रिटेन के ब्रैडफोर्ड विश्वविद्यालय से मैक्रो इकोनॉमिक पॉलिसी में एमएससी (विशिष्टता के साथ) और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत से इतिहास में एमए और पीएचडी की। उन्होंने पुस्तकों और पत्रिकाओं में कई पूर्ण लेख प्रकाशित किए हैं, जिसमें एक पूर्ण पुस्तक 'रीथिंकिंग मैक्रो-इकोनॉमिक्स 101: ए रिंगसाइड व्यू ऑफ द ग्लोबल फाइनेंशियल क्राइसिस फ्रॉम एशिया इन रियल टाइम' (एकेडमिक फाउंडेशन 2015) शामिल है।

वे पिछले 20 वर्षों से आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक (ईपीडब्ल्यू) और पूर्वी एशिया फोरम में आर्थिक मुद्दों पर एक नियमित टिप्पणीकार रहे हैं और द इकोनॉमिक टाइम्स, फाइनेंशियल एक्सप्रेस, बिजनेस स्टैंडर्ड, मिनट, इंडियन एक्सप्रेस और फाइनेंशियल टाइम्स (लंदन) में 200 से अधिक आलेखों का योगदान किया है। उनके प्रकाशनों को http://www.aloksheel.com/pap_pub.html पर उनके होमपेज से एक्सेस और डाउनलोड किया जा सकता है।



विश्व मामलों की
भारतीय परिषद
समूह हाउस, नई दिल्ली

